बिलीवर्स ईस्टर्न चर्च

लेक्शनरी

रविवारीय आराधना एवं अन्य विशेष दिनों के लिए
वचन पाठ - 2024-2025

Imprimatur

Metropolitan, Believers Eastern Church.

Copyright © 2024

Prepared by
Synodal Department of Liturgics and Faith

All rights reserved. No portion of this book may be reproduced in any form without prior written permission from the publisher.

Believers Eastern Church
World Headquarters, St Thomas Community
Thiruvalla - 689 103, Kerala, India

Price : ₹50.00

Printed in India.

विषय सूची

1	प्रस्तावना	5
2	वचन पाठ	6
3	चर्च कैलेण्डर	66
4	विशेष दिन	73

प्रस्तावना

पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा, एक सत्य परमेश्वर के नाम में ✠

बिलीवर्स ईस्टर्न चर्च का आधारभूत सिद्धान्त परमेश्वर के वचन को पढ़ने, अध्ययन करने और शिक्षा देने में प्राथमिकता देना है। यह केवल इसलिए नहीं है क्योंकि यह हमें प्रेरितों और कलीसिया के पितामह के द्वारा अनुसरण करने के लिए दिया गया एक तरीका है। बल्कि इसलिए भी क्योंकि परमेश्वर का वचन सामर्थ्यशाली है और हमारे जीवन को बदलने और परिवर्तित करने का साधन है।

परमेश्वर के वचन में जीवन को अन्दर-बाहर बदलने की सामर्थ्य है। ''क्योंकि परमेश्वर का वचन जीवित, और प्रबल, और हर एक दोधारी तलवार से भी बहुत चोखा है, और जीव, और आत्मा को, और गाँठ गाँठ, और गूदे गूदे को अलग करके, वार पार छेदता है, और मन की भावनाओं और विचारों को जाँचता है'' (इब्रानियों 4:12)।

पवित्र बाइबिल हमें जीने के लिए दिव्य सिद्धान्त प्रदान करती है और यह हमें विश्वास और आशा प्रदान करती है। सो विश्वास सुनने से, और सुनना मसीह के वचन से होता है (रोमियों 10:17)। यह महत्त्वपूर्ण है कि हम वचन को पढ़ें और अध्ययन करें और नियमित रूप से अपने पैरिश में लोगों को शिक्षा दें।

उस अन्त को प्राप्त करने के लिए यह लेक्शनरी वचन पाठों का एक संकलन है जो इस साल के रविवारीय आराधना और विशेष दिनों के लिए क्रमशः व्यवस्थित किया गया है। इस प्रकार यह हमारे लिए परमेश्वर के वचन को क्रमबद्ध रूप से पढ़ने और अध्ययन करने के लिए एक मार्गदर्शक है।

मेरी प्रार्थना है कि यह लेक्शनरी हमारे ज्ञान और परमेश्वर के साथ चलने में हमारे सभी पैरिशों को तंदुरूस्त, मजबूत और जीवन्त होने में मदद करेगी।

त्रिएक परमेश्वर, पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा की आशिषें आपके साथ हों। आमीन। ✠

✠ मोरान मॉर शमूएल थियोफिलस
मेट्रोपॉलिटन

कलीसिया वैश्विक कार्यालय
29 अक्टूबर 2024

3 नवम्बर 2024	1ला रविवार		
कलीसिया का पवित्रीकरण (*कुधोश इथो*)			
वचन का पाठ			
यशायाह 6:1–8	भजन 43	1 कुरिन्थियों 3:16, 17; 6:15–20	संत मत्ती 16:13–23

सुसमाचार विषय: यीशु मसीह, परमेश्वर का पुत्र है

यह पाठ किस के विषय में है?

यीशु ने लोगों से पूछा कि वे उसे क्या कहते हैं। इसके बाद, उन्होंने अपने शिष्यों से भी वही प्रश्न किया। संत पतरस ने ईश्वरीय प्रेरणा से सही उत्तर दिया, और यीशु ने कहा कि कलीसिया इसी विश्वास के वास्तविक अंगीकार पर बनी है। किन्तु जब यीशु ने अपने अगामी कष्टों की बात की, तो पतरस उसे समझ न सका और शैतान के विचारों को व्यक्त करने लगा।

हम इससे क्या सीखते हैं?

हालाँकि लोगों की अलग-अलग विचारधारा हो सकती है कि यीशु कौन है, लेकिन हम विश्वास से अंगीकार करते हैं कि यीशु ही मसीह है, जीवित परमेश्वर का पुत्र!

इसे हम कैसे लागू कर सकते हैं?

1. यह स्वीकारोक्ति कलीसिया की नींव है।
2. कलीसिया का सदस्य होने के नाते, हम अपनी कलीसिया और पारिवारिक प्रार्थनाओं में विश्वास प्रमाण को सामूहिक और व्यक्तिगत रूप से दोहराकर प्रतिदिन अपने विश्वास को स्वीकारते हैं।
3. कोई नहीं, यहाँ तक कि मृत्यु भी कलीसिया को यीशु और उनके द्वारा संसार को दी गई उद्धार की घोषणा करने से नहीं रोक सकता है।

10 नवम्बर 2024	2रा रविवार		
कलीसिया का समर्पण (हुदोश इथो)			
वचन का पाठ			
1 राजा 8:22–40	भजन 78:1–7	इब्रानियों 9:1–14	संत यूहन्ना 10:22–38

सुसमाचार विषयः परमेश्वर की आवाज सुनें और उसका अनुसरण करें

यह पाठ किस के विषय में है?

यीशु कहते हैं कि वह चरवाहा है जो उन लोगों को अनन्त जीवन देता है जो उसकी बात सुनते हैं, और उसका अनुसरण करते हैं, हालाँकि ऐसे कई लोग हैं जो उस पर विश्वास नहीं करेंगे या उसकी बात नहीं सुनेंगे, भले ही उन्होंने यीशु द्वारा किए गए बहुतेरे आश्चर्यकर्म देखे हों।

हम इससे क्या सीखते हैं?

यीशु अच्छा चरवाहा है, और यदि हम उसकी आवाज सुनते हैं तो हम सुरक्षित रहेंगे। हम यह भी सीखते हैं कि फरीसी यीशु पर पत्थरवाह करना चाहते हैं क्योंकि वह परमेश्वर का पुत्र होने का दावा करता है।

इसे हम कैसे लागू कर सकते हैं?

1. जब हम परमेश्वर का वचन सुनते और पढ़ते हैं, तो हम परमेश्वर की आवाज सुन रहे होते हैं।
2. सुनना अर्थात् मानना और आज्ञाकारिता का अर्थ, परमेश्वर ने जो पवित्र वचन में कहा है उस पर भरोसा रखना है।
3. जब हम चरवाहे की आवाज का अनुसरण करते हैं, तो हम आश्वस्त हो सकते है कि हम गलत नहीं होंगे।

17 नवम्बर 2024	3रा रविवार	माता-पिता रविवार—*विशेष दान*
उद्घोषणा का समयः यूहन्ना बपतिस्मादाता को जन्म		

वचन का पाठ

उत्पति 17:15–22	भजन 123	2 पतरस 1:1–15	संत लूका 1:5–25

सुसमाचार विषयः परमेश्वर की प्रतिज्ञा पर भरोसा रखें

यह पाठ किस के विषय में है?

परमेश्वर आश्चर्यपूर्ण तरीके से एक बच्चे के लिए एक वृद्ध धर्मी दम्पति की प्रार्थना का उत्तर देते हैं। प्रभु का दूत बताता है कि बच्चे का क्या नाम रखा जाए, उसका पालन-पोषण कैसे किया जाए, और सभों को उद्धार दिलाने में उसकी क्या भूमिका होगी। लेकिन पिता जकरयाह में विश्वास की कमी होती है और परिणामस्वरूप वह अपने बच्चे के जन्म तक बोलने में असमर्थ होता है।

हम इससे क्या सीखते हैं?

परमेश्वर हमारी प्रार्थनाओं का उत्तर अपने आश्चर्यपूर्ण तरीके से देते हैं। लेकिन हमें विश्वास रखना होगा और हमारे जीवन के लिए परमेश्वर की प्रतिज्ञा पर कार्य करें।

इसे हम कैसे लागू कर सकते हैं?

1. परमेश्वर आश्चर्यकर्म कर सकते हैं, भले ही स्थिति व्यवहारिक रूप से असम्भव लगे।
2. लेकिन हमें विश्वास रखने की आवश्यकता है क्योंकि विश्वास के बिना परमेश्वर को प्रसन्न करना असम्भव है [इब्रानियों 11:6]।
3. विश्वास हमें परमेश्वर के वायदों पर कार्य करने की ओर ले जाना चाहिए।

21 नवम्बर 2024 थियोटोकोस (प्रभु की माता) के प्रवेश का पर्व			
वचन का पाठ			
निर्गमन 40:1–5, 9–10,	1 राजा 8:1, 3–4, 6–7, 9–11	इब्रानियों 9:1–7	संत लूका 10:38–42; 11:27–28

सुसमाचार विषय: हम जीवित परमेश्वर के मंदिर हैं

यह पाठ किस के विषय में है?

यह पर्व, जैसा कि पवित्र कलीसिया की जीवित परम्परा द्वारा दिया गया है, संत मरियम को उसके माता–पिता द्वारा यरुशलेम के मंदिर प्रस्तुत करने के याद दिलाता है, जब वह छोटी बच्ची थी।

हम इससे क्या सीखते हैं?

हमें पता चलता है कि, माता मरियम के माता–पिता अपनी मन्नतें पूरी करने, उन्हें यरुशलेम में मंदिर ले गए, जहाँ याजक यकरयाह (संत यूहन्ना बपतिस्मादाता के पिता) ने उसे स्वीकार किया, और जब तक उसकी मंगनी संत यूसुफ के साथ न हो गई तब तक वह वहीं परमेश्वर की सेवा करती रही।

इसे हम कैसे लागू कर सकते हैं?

1. जैसे मरियम के माता–पिता ने उसे परमेश्वर की सेवा में समर्पित कर दिया, वैसे ही माता–पिता होने के नाते हम में ऐसा ही करने की इच्छा होनी चाहिए।
2. यह माता मरियम के जीवन के बारे में मनन करने का अच्छा समय है – विशेष रूप से परमेश्वर की आज्ञा मानने के लिए उसकी पूरी तत्परता।
3. चूँकि यह पर्व क्रिसमस से केवल एक महीने पहले मनाया जाता है, इससे हमें मदद मिलती है कि यीशु मसीह के जन्मोत्सव (क्रिसमस) की प्रतीक्षा करें।

24 नवम्बर 2024	**4था रविवार**		
उद्घोषणा का समय: मरियम को यीशु मसीह के जन्म की घोषणा			
वचन का पाठ			
उत्पति 28:10–22	भजन 40:5–10	इब्रानियों 2:14–18	संत लूका 1:26–38

सुसमाचार विषय: आज्ञाकारिता के साथ प्रत्युत्तर दें

यह पाठ किस के विषय में है?

जिब्राइल स्वर्गदूत को गलील की एक युवा कुंवारी मरियम के पास मानव जाति के लिए सबसे बड़ी खबर की घोषणा करने के लिए भेजा जाता है। मरियम का प्रतिउत्तर परमेश्वर के प्रति आज्ञाकारिता है।

हम इससे क्या सीखते हैं?

मरियम हमारे विश्वास, आज्ञाकारिता और संत जीवन का सबसे बड़ा उदाहरण है, क्योंकि जब वह स्थिति की असम्भवता को समझती थी, तब भी उसने स्वर्गदूत द्वारा बताई गई बातों पर विश्वास करना चुना और स्वयं को परमेश्वर की इच्छा के प्रति समर्पित कर किया।

इसे हम कैसे लागू कर सकते हैं?

1. हम माता मरियम का आदर, सम्मान करते हैं और उन्हें धन्य कहते हैं।
2. परमेश्वर पर भरोसा करें और आइए कहें, 'आपकी इच्छा के अनुसार मेरे लिए ऐसा ही हो'
3. जैसे माता मरियम का जीवन मसीह की ओर इशारा करता है, वैसे ही हमारा जीवन भी मसीह की ओर इशारा करे।

1 दिसम्बर 2024	5वाँ रविवार	महिला रविवार—*विशेष दान*	
उद्घोषणा का समय: संत मरियम का इलीशिबा से भेंट करना			
वचन का पाठ			
नीतिवचन 31:10–31	भजन 80:1–7, 17–19	1 पतरस 3:1–7	संत लूका 1:39–56

सुसमाचार विषय: आशीषित होने के लिए आशिष

यह पाठ किस के विषय में है?

यह पाठ एलिजाबेथ और माता मरियम की मुलाकात के बारे में है। मरियम एक भविष्यवाणी गीत गाती है, जिसमें परमेश्वर को उसके गर्भधारण का चमत्कार बताया गया है। वह स्वयं को नम्र करती है और परमेश्वर को सराहती है जिसने ऐसे महान कार्य किए हैं।

हम इससे क्या सीखते हैं?

क्योंकि मरियम ने परमेश्वर के वादे पर विश्वास किया और उसे स्वीकार किया, इसलिए अब मरियम सभी पीढ़ियों के लिए आशिष का कारण बन जाती है।

इसे हम कैसे लागू कर सकते हैं?

1. जब परमेश्वर अपनी प्रतिज्ञाओं को पूरी करता है, तो परमेश्वर को धन्य कहना न भूलें।
2. जब हम मरियम को धन्य कहते हैं, तो हम इस पाठ की भविष्यवाणी को पूरी करते हैं।
3. यीशु मसीह के द्वारा उद्धार के सबसे बड़े उपहार के लिए परमेश्वर को सारी महिमा देने और दूसरों को बताने के लिए यह एक विशेष अवसर है।

8 दिसम्बर 2024	**6वाँ रविवार**	**बाल रविवार— *विशेष दान***	
उद्घोषणा का समय: यूहन्ना बपतिस्मादाता का जन्म			
वचन का पाठ			
1 शमूएल 1:20-28	भजन 127:1-5	इफिसियों 6:1-4	संत लूका 1:57-80

सुसमाचार विषय: हमारा जीवन लोगों को मसीह की ओर इंगित करे

यह पाठ किस के विषय में है?

जकरयाह और एलिजाबेथ के लिए परमेश्वर की प्रतिज्ञा पूरी हुई और जकरयाह का मुँह खुल गया और उन्होंने अपने बच्चे का नाम यूहन्ना रखा - जिसका अर्थ है, 'परमेश्वर का अनुग्रह।' और उसके विशेष बुलाहट के कारण, यूहन्ना अग्रदूत लोगों से अलग होकर बड़ा हुआ, एक विशेष सेवकाई के लिए तैयार हुआ।

हम इससे क्या सीखते हैं?

हम सीखते हैं कि परमेश्वर अपनी प्रतिज्ञा को पूरी करता है और वह अपने विशेष उद्देश्यों के लिए चुने हुए लोगों को बुलाता और तैयार करता है। और वह उद्देश्य यूहन्ना के लिए, 'अग्रदूत बनना था' जो यीशु से पहले गया और मार्ग तैयार किया।

इसे हम कैसे लागू कर सकते हैं?

1. चूँकि बच्चे परमेश्वर के दान हैं, इसलिए माता-पिता को उन्हें परमेश्वर की इच्छा के अनुसार पालना चाहिए।
2. अभिभावक होने के कारण, हमें अपने बच्चों के लिए प्रार्थना करनी चाहिए कि वे अपना जीवन कई लोगों को उद्धार में लाने के लिए समर्पित करें।
3. हमारा कर्तव्य भी संत यूहन्ना के जैसा होना चाहिए - अपने शब्दों और कार्यों से मसीह में उद्धार का मार्ग दिखाना।

15 दिसम्बर 2024	**7वां रविवार**		
संत यूसुफ को उद्घोषणा			
वचन का पाठ			
यशायाह 45:18–25	भजन 126	1 पतरस 2:11–17	संत मत्ती 1:18–25

सुसमाचार विषयः जब हम परमेश्वर की आज्ञा को मानते हैं, परमेश्वर की योजना पूरी होती है

यह पाठ किस के विषय में है?

यूसुफ को जब यह पता चला कि मरियम विवाह से पहले गर्भवती है, तब प्रभु का एक दूत यूसुफ से कहता है कि मरियम को अपनी पत्नी के रूप में ले ले और उसे त्याग न दे। तब वह पूरी तरह से असम्भव का खुलासा करता है – कि मरियम का बच्चा कोई सामान्य बच्चा नहीं था, बल्कि वह पवित्र आत्मा द्वारा गर्भ धारण किया था।

हम इससे क्या सीखते हैं?

यीशु के जन्म से लगभग 600 वर्ष पहले, यशायाह भविष्यद्वक्ता ने कुंवारी से उद्धारकर्ता के जन्म के बारे में भविष्यवाणी की थी। अब सही समय पर प्रतिज्ञा पूरी हुई। हमें अवश्य रूप से यह याद रखना चाहिए कि परमेश्वर अपनी प्रतिज्ञा पूरा करेगा।

इसे हम कैसे लागू कर सकते हैं?

1. संत यूसुफ के समान, हमें भी परमेश्वर की आज्ञा माननी है, भले ही हम उसकी योजनाओं को न समझ सकें।
2. उत्साहित रहें, परमेश्वर अपनी प्रतिज्ञाओं को पूरी करेगा, भले ही हमें लगता है कि देर हो रही है।
3. धीरज रखना सीखें, विश्वास रखें।

22 दिसम्बर 2024	$8^{वाँ}$ रविवार	क्रिसमस के पहले का रविवार	
वचन का पाठ			
यशायाह 11:1-9	भजन 89:1-4, 19-26	प्रेरितों के काम 3:16-26	संत यूहन्ना 1:1-14

सुसमाचार विषयः परमेश्वर मानवता को अपनाता है

यह पाठ किस के विषय में है?

यह संपूर्ण पवित्र शास्त्र के सबसे महत्वपूर्ण पाठों में से एक है। यह हमें बताता है कि वचन-अर्थात् यीशु, परमेश्वर का अनन्त पुत्र, हमारी तरह पूर्ण मनुष्य बनकर हमारे बीच में डेरा किया। ईम्मानुएल -अर्थात परमेश्वर हमारे साथ है।

हम इससे क्या सीखते हैं?

हम सीखते हैं कि एक ही समय में यीशु पूर्ण रूप से (100 प्रतिशत) परमेश्वर थे और साथ ही पूर्ण रूप से (100 प्रतिशत) मनुष्य थे। हम सीखते हैं कि हमें जगत की ज्योति यीशु को अपने जीवन में स्वीकार करने, परमेश्वर के जीवन में भाग लेने और इस तरह परमेश्वर की संतान होने का अविश्वसनीय सौभाग्य प्राप्त है।

इसे हम कैसे लागू कर सकते हैं?

1. यीशु के मानवीय दृष्टिकोण को जानने के लिए सुसमाचार पढ़ें - वह कैसे रहता और कैसे काम करता था।
2. आज हम दूसरों के समाने यीशु का प्रतिनिधित्व करते हैं। आओ, हम उसकी तरह जिएं।
3. ऐसे कई लोग हैं जो अभी भी आध्यात्मिक अंधकार में हैं। निरंतर प्रार्थना करें कि परमेश्वर की ज्योति उनके हृदय में चमके।

25 दिसम्बर 2024

यीशु मसीह का जन्म-पर्व—क्रिसमस (येल्दो)

वचन का पाठ

यशायाह 9:1–7	भजन 96	इब्रानियों 1:1–12	संत मत्ती 2:1–12

सुसमाचार विषय: परमेश्वर अपने उद्धार की प्रतिज्ञा को पूरा करता है

यह पर्व किस से विषय में है?

हम उत्सव मनाते हैं कि कैसे परमेश्वर मनुष्य के रूप में जन्म लेकर मानवता में प्रवेश किया–यीशु मसीह।

हम इससे क्या सीखते हैं?

हम मानवजाति के लिए परमेश्वर के उद्धार के वायदे की पूर्ति के बारे में सीखते हैं, जो बालक यीशु के रूप में हुई। यीशु के जन्म का वृत्तांत ईश्वरीय हस्तक्षेपों से भरा हुआ है – बेथलहम में भविष्यवाणियों को पूरा करनेवाली चरनी में पैदा होनेवाला बच्चा, एक तारा जो पूर्व से ज्योतिष्यों को विशेष उपहारों के साथ लाया, उन्हें दूसरे रास्ते से जाने के लिए प्रेरित किया, स्वर्गदूतों ने मैदान में चरवाहों को जन्म की घोषणा की और बच्चे यीशु को एक दुष्ट राजा के क्रोध से ईश्वरीय रूप से संरक्षित किया गया।

इसे हम कैसे लागू कर सकते हैं?

1. क्रिसमस पर्व के दौरान, एक–दूसरे को 'मसीह जन्मा है' कह कर बधाई दें और उसके प्रतिउत्तर में 'उसकी महिमा करो' कहें।
2. परमेश्वर ने हमारे लिए और पूरी मानवजाति के लिए जो किया है, उस पर खुशी मनाते हुए क्रिसमस का मनाएं ।
3. इस अवसर का सदुपयोग करते हुए दूसरों को रचनात्मक तरीके से शब्दों और कार्यों द्वारा क्रिसमस की कहानी बताएं।

29 दिसम्बर 2024	9वाँ रविवार		क्रिसमस के पश्चात् पहला रविवार
वचन का पाठ			
उत्पति 37:12-28	भजन 148	1 कुरिन्थियों 10:1-13	संत मत्ती 2:9-15, 19-23

सुसमाचार विषय: जैसा परमेश्वर अगुवाई करता है, वैसा ही अनुसरण करें

यह पाठ किस के विषय में है?

यह पाठ बताता है कि कैसे परमेश्वर ने बचपन में यीशु को नष्ट करने की दुष्ट की योजना को विफल कर दिया और कैसे इन सबके माध्यम से, यीशु ने मसीह के बारे में प्राचीन भविष्यवाणियों को पूरा किया।

हम इससे क्या सीखते हैं?

दुश्मन कितना भी प्रयास करे, परमेश्वर की योजना और उद्देश्य नष्ट नहीं किए जा सकते। परमेश्वर न केवल अपनी प्रतिज्ञाओं को पूरा करेगा, बल्कि उन लोगों की भी रक्षा करेगा जिनके माधयम से उनकी प्रतिज्ञाएं पूरी होनी हैं।

इसे हम कैसे लागू कर सकते हैं?

1. ज्योतिष्यों और यीशु के सांसारिक पिता संत यूसुफ की तरह, परमेश्वर के निर्देशों का पालन करें।
2. माता-पिता, विशेष रूप से पिता, क्योंकि उन्हें अपने बच्चों की रक्षा की जिम्मेदारी होती है, विशेष रूप से जब वे छोटे हों, उन्हें परमेश्वर की बात सावधानी से सुननी चाहिए और उसकी आज्ञा का पालन करना चाहिए।
3. परमेश्वर की सुरक्षा में भरोसा रखें: अपने लिए, अपने परिवार के लिए और अपने बच्चों के लिए।

5 जनवरी 2025	10वाँ रविवार	क्रिसमस के पश्चात् दूसरा रविवार

वचन का पाठ

यशायाह 26:1–12	भजन 85	इब्रानियों 11:23–31	संत लूका 2:40–52

सुसमाचार का विषयः परमेश्वर और मनुष्य के अनुग्रह में बढ़ना

यह पाठ किस के विषय में है?

अपनी परम्परा के अनुसार, फसह का पर्व मनाने के बाद, यीशु का परिवार लौट आया, केवल एक दिन के बाद एहसास हुआ कि बालक यीशु उनके साथ नहीं है। माता–पिता उसे परमेश्वर के भवन में पाते हैं और अपनी बुद्धिमता से उसे सुननेवाले सभी आश्चर्यचकित हो रहे थे। बालक यीशु अपने माता–पिता के साथ लौटता है और परमेश्वर और मनुष्यों के अनुग्रह में बढ़ता है।

हम इससे क्या सीखते हैं?

यीशु अपने जीवन के उद्देश्य को बहुत स्पष्ट रूप से जानता था। फिर भी जैसी उसकी बुद्धि थी आश्चर्य की बात है, वह अधीनता में बड़ा हुआ इसलिए वह परमेश्वर और मनुष्य के अनुग्रह में बड़ा हुआ।

इसे हम कैसे लागू कर सकते हैं?

1. हमें उन लोगों के अधीन रहना चाहिए जिन्हें हमारे जीवन पर अधिकार के रूप में रखा गया है। उदाहरणः बच्चे माता–पिता के अधीन रहें।
2. अपने अधिकारी के अधीन रहने से परमेश्वर का अनुग्रह आपको परमेश्वर के साथ–साथ लोगों के साथ भी मिलती है।
3. यीशु के समान, हम जहाँ भी हों, हमें पिता के कार्य में शामिल होना चाहिए–जो सभी के लिए उद्धार का पैगाम लाना है।

6 जनवरी 2025, सोमवार

हमारे प्रभु की थिओफॅनी का पर्व (देनहो)

वचन का पाठ

यशायाह 12:1-6	भजन 29	इब्रानियों 10:15-25	संत मत्ती 3:1-17

सुसमाचार का विषयः यीशु में सारी सृष्टि का नवीनीकरण

यह पर्व किस के विषय में है?

इस पर्व में यूहन्ना बपतिस्मादाता द्वारा यर्दन नदी में यीशु मसीह के बपतिस्मा का उत्सव मनाना है।

हम इससे क्या सीखते हैं?

हम सीखते हैं, यीशु कौन है और उत्तर स्वयं परमेश्वर ने सार्वजनिक रूप से घोषित किया, कि यीशु उसका पुत्र था। हम यह भी सीखते हैं कि यीशु परमेश्वर का मेमना बनने आये थे जो संसार के पापों को अपने ऊपर ले लेंगे। यह भी कि, यीशु के बपतिस्मा के दौरान, सृष्टि स्वयं नवीनीकृत हो रही थी।

इसे हम कैसे लागू कर सकते हैं?

1. जल को आशीषित करनाः पर्व के दौरान, याजक पात्र (ग्लास जार) में या बड़े जल स्रोतों (समुद्र, नदी या झील) में जल को आशीषित करते हैं। यह आशीषित जल, घरों को आशीषित करने के लिए उपयोग किया जाता है।
2. हमारे घरों को आशीषित करनाः पवित्र (या आशीषित) जल को लेकर याजक घरों में जाता है और घर को, वहाँ की सब वस्तुओं को और परिवार के सदस्यों को आशीषित करता है। इस तरह से हम अपने घरों और अपनी कलीसिया के बीच आध्यात्मिक संबंध स्थापित करते हैं।
3. बपतिस्मा में और बपतिस्मा के माध्यम से हम परमेश्वर के परिवार के सदस्य बन जाते हैं, जल द्वारा शुद्ध किए गए और मुरोन तेल के द्वारा मुद्रित किए जाते हैं, जो पवित्र आत्मा का प्रतीक है।

12 जनवरी 2025	11वाँ रविवार	थिओफॅनी के पश्चात् पहला रविवार	
वचन का पाठ			
यशायाह 49:7–13	भजन 91	इफिसियों 1:3–14	संत मत्ती 4:1–22

सुसमाचार का विषयः परीक्षाओं पर विजय

यह पाठ किस के विषय में है?

इस पाठ में, यीशु वचन की सामर्थ्य से शैतान की परीक्षाओं पर विजय प्राप्त करते हैं। इसके बाद यीशु अपनी पृथ्वी की सेवकाई आरम्भ करते हैं, लोगों को पश्चाताप के लिए आमंत्रित करते हैं और अपने प्रथम शिष्यों को अपना अनुसरण करने के लिए बुलाते हैं।

हम इससे क्या सीखते हैं?

बिल्कुल यीशु के समान हम भी परीक्षा में पड़ेंगे, और हमारा भी विश्वास परखा जायेगा। लेकिन यीशु के जैसे, हम भी वचन की सामर्थ्य से विजयी हो सकते हैं।

इसे हम कैसे लागू कर सकते हैं?

1. पवित्र वचनों को सुनने, पढ़ने, अध्ययन करने, मनन करने और याद करने की आदत बनाएँ।
2. जब परीक्षाएं आए, तो परमेश्वर के वचन को स्मरण करें और अंगीकार करें। क्योंकि वचन शैतान के द्वारा लाई गई परीक्षाओं पर विजय पाने के लिए एक सामर्थी साधन हैं।
3. जैसा यीशु के साथ था, शैतान के छल को समझने में वचन हमारी सहायता करेंगे।

19 जनवरी 2025	12वाँ रविवार	थिओफॅनी के पश्चात् दूसरा रविवार	
वचन का पाठ			
यशायाह 51:1–8	भजन 139:1–6, 13–18	इब्रानियों 1:1–2; 2:1–4	संत यूहन्ना 1:43–51

सुसमाचार विषयः वह हमें बुलाने से पहले ही जानता है

यह पाठ किस के विषय में है?

यह पाठ बताता है कि कैसे फिलिप्पुस अपने मित्र नतनएल को (जिसे (बार्थोलोम्यू) के नाम से भी जाना जाता है) को यीशु के पास लाता है।

हम इससे क्या सीखते हैं?

परमेश्वर बुलाने से पहले ही हमें जानता है – ठीक वैसे ही जैसे यीशु नतनएल के शुद्ध ह्रदय को जानता था और उसे देखा जहाँ वह था इससे पहले कि फिलिप्पुस उसे यीशु के पास लाए।

इसे हम कैसे लागू कर सकते हैं?

1. परमेश्वर किसी भी व्यक्ति को उपयोग कर सकता है, चाहे वह कहीं से भी आया हो। किसी को कभी भी नाजरत से कुछ अच्छा आने की उम्मीद नहीं थी।
2. फिलिप द्वारा नतनएल को 'आओ और देखो' का निमंत्रण हम सभी के लिए एक निमंत्रण हैः परमेश्वर को व्यक्तिगत रूप से अनुभव करने का निमंत्रण।
3. जैसे फिलिप्पुस ने अपने मित्र को यीशु के पास लाया, वैसे ही हमें भी लोगों को यीशु के पास लाने के अवसर खोजने चाहिए।

26 जनवरी 2025	**13वाँ रविवार**	**थिओफॅनी के पश्चात् तीसरा रविवार** **याजक रविवार–*विशेष दान***

वचन का पाठ

यिर्मयाह 31:1–12	भजन 62:5–12	1 कुरिन्थियों 3:16–4:5	संत यूहन्ना 3:1–12

सुसमाचार विषयः नया जन्म

यह पाठ किस के विषय में है?

यीशु ने नीकुदेमुस को नए सिरे से जन्म के द्वारा परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने का मार्ग बताया। यीशु आगे कहते हैं: नए सिरे से जन्म लेना, पानी से जन्म लेना (बपतिस्मा) और आत्मा से जन्म लेना (पवित्र आत्मा का वरदान) है।

हम इससे क्या सीखते हैं?

नया जन्म एक आध्यात्मिक रहस्य है। यह हमारी उद्धार की यात्रा का आरम्भ है, जिसमें हम जल के बपतिस्मा में यीशु से जुड़ जाते हैं (रोमियों 6:1–10) और अभिषेक (क्रिस्मेशन) द्वारा पवित्र आत्मा प्राप्त करते हैं।

इसे हम कैसे लागू कर सकते हैं?

1. चूँकि बपतिस्मा परमेश्वर के राज्य में प्रवेश है, जो हमारी उद्धार की यात्रा का आरम्भ है अतः हम सभी को अवश्य ही बपतिस्मा लेना चाहिए, चाहे उम्र कुछ भी हो।
2. पश्चाताप और विश्वास दोनों के साथ पानी में हमारा बपतिस्मा होना चाहिए।
3. हम जो पहले से ही परमेश्वर के राज्य के भाग हैं, बहुत से लोगों को परमेश्वर की संतान बनने और नए जन्म का अनुभव प्राप्त करने के लिए आमंत्रित करना हमारी जिम्मेदारी है।

2 फरवरी 2025	**14वाँ रविवार**	**थिओफॅनी के पश्चात् चौथा रविवार**
यीशु के अर्पण का पर्व (*मयल्तो*)		

वचन का पाठ

यशायाह 11:1–10	इब्रानियों 7:7–17	इफिसियों 3:13–21	संत लूका 2:22–40

सुसमाचार विषयः परमेश्वर स्वयं को उन लोगों के सामने प्रकट करता है, जो उसकी बाट जोहते हैं

यह पर्व किस के विषय में है?

यह पर्व यीशु को मंदिर में याजक के सामने उसके माता–पिता यहूदी व्यवस्था के अंतर्गत उनके जन्म के 40 दिन बाद प्रस्तुतिकरण की याद दिलाता है।

हम इस पर्व से क्या सीखते हैं?

हमें याद दिलाया जाता है कि हमारे प्रभु स्वयं को उन लोगों पर प्रकट करेंगे, जो शुद्ध हैं और संत शमौन और संत हन्नाह की तरह उनसे मिलने की उम्मीद के साथ इंतजार करते हैं। यह कि यीशु पूरी तरह से मनुष्य हैं और उन्होंने इस तथ्य को व्यवस्था की सभी मांगों को पूरा करके दिखाया।

इसे हम कैसे लागू कर सकते हैं?

1. प्रसोवत्तर धन्यवाद की विधिः महिलाओं को बच्चे के जन्म के 40 दिन बाद प्रारंभिक कलीसिया ने आराधनालय में आने के लिए कहा कि वे आकर माँ और बच्चे की सुरक्षा के लिए धन्यवाद दे।
2. इसी समय नवजात (शिशुओं) को भी चर्च में बप्तिस्मा और क्रिसमेशन के लिए तैयार किया जाता है। इस तरह माता पिता सार्वजनिक रूप से घोषणा करते हैं कि उनके बच्चे परमेश्वर द्वारा प्रदान किये गए थे और इसलिए उनका पालन पोषण परमेश्वर की महिमा के लिए किया जाएगा।
3. मोमबत्तियाँ पकड़ना – संत शमौन के इस संदर्भ के प्रतीक के रूप में कि यीशु मसीह अन्यजातियों के लिए प्रकटीकरण की ज्योति हैं। विश्वासी इस पर्व के दिन दिव्य आराधना के दौरान जलती हुई मोमब. तियाँ पकड़ते हैं।

9 फरवरी 2025	15वाँ रविवार	थिओफॅनी के पश्चात् पाँचवाँ रविवार

वचन का पाठ

यशायाह 41: 8–20	भजन 111	2 कुरिन्थियों 4:1–6	संत मरकुस 1:12–20

सुसमाचार विषयः यीशु की बुलाहट का प्रतिउत्तर देना

यह पाठ किस के विषय में है?

यह पाठ यीशु की पृथ्वी पर की सेवकाई के आरम्भ को चिह्नित करता है जहाँ वह लोगों को परमेश्वर के राज्य की सुसमाचार की घोषणा करते हुए पश्चाताप करने के लिए कहते है और अपने प्रथम शिष्यों को अपने पीछे आने को निमंत्रित करते है।

हम इससे क्या सीखते हैं?

परमेश्वर ने सरल, साधारण एवं अशिक्षित लोगों को अपना प्रथम शिष्य होने के लिए चुना। क्योंकि वे यीशु की बुलाहट का प्रतिउत्तर सकारात्मक रूप से देते हुए उनके पीछे हो लिए, और वे प्रेरित बन गए (इफिसियों 2:20) जिन पर कलीसिया स्थापित हुई और पवित्र आत्मा की सामर्थ से वे 'सारे जगत को उलट पुलट' करनेवाले बन गए (प्रेरित काम 17: 6)।

इसे हम कैसे लागू कर सकते हैं?

1. पश्चाताप न केवल यीशु के साथ हमारी यात्र की शुरूआत है, बल्कि हमारे जीवन में एक निरंतर जारी रहनेवाली वास्तविकता हैं।
2. हमें यीशु की बुलाहट का प्रतिउत्तर देने के लिए सब कुछ छोड़कर उनके पीछे होने के लिए तैयार रहना चाहिए।
3. परमेश्वर अकसर अपने लिए सामर्थी कार्यों को पूरा करने के लिए साधारण लोगों का उपयोग करते है।

16 फरवरी 2025	16वाँ रविवार सभी स्वर्गवासी पुरोहित		
वचन का पाठ			
व्यवस्थाविवरण 34:1–8	भजन 90	1 थिस्सलुनीकियों 4:13–5:11	संत मत्ती 24:42–51

सुसमाचार विषयः स्वामी का आगमन

यह पाठ किस के विषय में है?

एक स्वामी अपने सेवक को अपने घर की जिम्मेदारी सौंपकर चला जाता है। स्वामी एक अप्रत्याशित समय पर लौटता है और अपने सेवकों को उनकी वफादारी या भण्डारीपन के अनुसार प्रतिफल देता है।

हम इससे क्या सीखते हैं?

यह दृष्टांत हमारे लिए एक चेतावनी है – हमें अवश्य ही अपने स्वामी यीशु मसीह की वापसी के लिए हमेशा तैयार रहना चाहिए। उनका विलम्ब से वापस आना हमें गैर जिम्मेदार और दुष्ट न बनाने पाएं। हमें अवश्य ही वफादार और बुद्धिमान बनना चाहिए।

इसे हम कैसे लागू कर सकते हैं?

1. प्रतिदिन इस मन के साथ जीएं कि यीशु मसीह आज ही वापस आएंगे।
2. दास को जो कुछ भी सौंपा गया है, उसके प्रति उसे विश्वासयोग्य और जिम्मेदार होने के लिए बुलाया गया है
3. जब आलस्य का प्रलोभन आए, हमें याद दिलाना चाहिए कि अगर हम अपने पास दिए गए संसाधनों के प्रति वफादार और मेहनती रहें, तो हमारे लिए प्रतिफल इंतजार कर रहे हैं।

23 फरवरी 2025	**17$^{वाँ}$ रविवार**	**महान् लेंट से पहले का रविवार**

सभी स्वर्गवासी विश्वासी

वचन का पाठ

यशायाह 38:10–20	भजन 111	1 कुरिन्थियों 15:20–28	संत लूका 12:32–48

सुसमाचार विषयः हमें जो दिया गया है उसके प्रति वफादार रहें

यह पाठ किस के विषय में है?

यीशु एक स्वामी के विषय में एक दृष्टांत बताते हैं जो अपने दास को अपने घर की देखभाल के लिए छोड़कर एक विवाह में गया था और कैसे एक दास को किसी भी समय यहां तक कि बहुत देर रात में भी अपने स्वामी के आगमन पर उनका स्वागत करने के लिए तैयार रहना चाहिए।

हम इससे क्या सीखते हैं?

आइये, हम अपने आप से पूछें : जब हमारा स्वामी अप्रत्याशित समय पर लौटता है, तो क्या वह हमें जो कुछ दिया या है उसके प्रति वफादार पाएगा? या क्या वह हमें आलसी और लापरवाह की तरह देखेगा? हमें अवश्य ही अपनी कमर कसनी चाहिए और हमारा दिया हमेशा जलते रहना चाहिए (संत लूका 12:35)।

इसे हम कैसे लागू कर सकते हैं?

1. यीशु के वापस आने का वास्तविक दिन ढूँढने की परीक्षा में न पड़ें जैसा कि कई लोग करते हैं। यह तो केवल पिता ही जानते हैं (संत मरकुस 13:32)।
2. हमारे स्वामी ने हममें से प्रत्येक को एक माता–पिता, पति–पत्नी, बच्चे, सेवक और एक याजक आदि के रूप में जिम्मेदारियाँ दी हैं। आइये, हम इन्हें ईमानदारी से पूरा करें।
3. हमारे लिए, जो अपने स्वामी को जानते हैं, हमें अधिक सतर्क रहना चाहिए। यदि हम जानते हैं कि हमारा स्वामी क्या चाहता है और फिर उसकी इच्छा को नहीं करते, तो हमारी सजा कहीं अधिक होगी।

महान् लेन्ट की शुरूआत			
2 मार्च 2025	**18वाँ रविवार**		**महान् लेन्ट का पहला रविवार**
वचन का पाठ			
यशायाह 58:5–14	भजन 50:1–6	कुलुस्सियों 3:1–17	संत यूहन्ना 2:1–11

सुसमाचार विषय: यीशु दुख को खुशी में बदल देता है

यह पाठ किस के विषय में है?

एक विवाह में जहाँ यीशु की माँ और उनके शिष्य मौजूद होते हैं, यीशु ने पानी को दाखरस में बदल दिया, जिससे कई लोग उन पर विश्वास करने लगे।

हम इससे क्या सीखते हैं?

यहाँ तक कि जब हमारे जीवन में आशा के विपरीत चीज़ें घटित होती हैं, तब भी यीशु आश्चर्यकर्म कर सकते हैं और हमारी परिस्थिति को खुशियों में बदल सकते हैं। आमतौर पर, अच्छा दाखरस बनाने में वर्षों लग जाते हैं, लेकिन पानी को दाखरस में बदलने में यीशु को केवल एक क्षण लगा।

इसे हम कैसे लागू कर सकते हैं?

1. अप्रत्याशित मानसिक तनाव और उदासी के क्षणों में, आश्चर्यकर्म हेतु यीशु पर भरोसा करें।
2. हमारे जीवन में आनन्द की पुर्नस्थापना के लिए यीशु पर भरोसा करें।
3. आश्चर्यकर्म हमें यीशु की ओर इंगित करते हैं और उस पर विश्वास करने में हमारी मदद करते हैं।

9 मार्च 2025	**19वाँ रविवार**	**महान् लेन्ट का दूसरा रविवार (कोढ़ी की चंगाई)**	
वचन का पाठ			
2 राजा 5:1–14	भजन 51:1–17	रोमियों 3:27–4:5	संत लूका 4:40–41, 5:12–16

सुसमाचार विषय: यीशु बहिष्कृत लोगों को गले लगाते हैं

यह पाठ किस के विषय में है?

यहाँ यीशु एक कोढ़ी को चंगा करते हैं, जो बाद में एक सामर्थी गवाह बन जाता है जब बड़ी संख्या में लोग यीशु की सुनने और उसके द्वारा चंगाई प्राप्त करने के लिए आते हैं।

हम इससे क्या सीखते हैं?

यीशु ने सबका स्वागत किया और सबको गले लगाया, विशेषकर उन लोगों को जिन्हें समाज ने तिरस्कृत कर दिया था। हम यीशु को एक कोढ़ी को छूते और चंगा करते हुए देखते हैं, इस प्रकार सभी के लिए परमेश्वर का प्रेम और देखभाल दर्शाते हैं।

इसे हम कैसे लागू कर सकते हैं?

1. समाज में बहिष्कृत लोगों की खोज करें – गरीब, विधवा, कोढ़ी, बेघर और अनचाहे; आइये, हम उन्हें यीशु के प्रेम के साथ स्पर्श करें।
2. परमेश्वर ने जो कुछ हमारे लिए किया है आइये, हम उस बात के लिए सामर्थी गवाह बनें।
3. जब हम दूसरों की सेवा करते हैं, तो हम उनके लिए 'यीशु' बन जाते हैं।

16 मार्च 2025	**20वाँ रविवार**	**महान् लेन्ट का तीसरा रविवार (लकवाग्रस्त को चंगाई)**

वचन का पाठ			
2 राजा 2:1–11	भजन 22:23–31	रोमियों 5:1–11	संत मरकुस 2:1–12

सुसमाचार विषयः यीशु पापों को क्षमा करते और हमारे शरीरों को स्वस्थ करते हैं

यह पाठ किस के विषय में है?

चार मित्र एक लकवाग्रस्त व्यक्ति को यीशु के पास लाते हैं। वह उसके पापों को क्षमा करता है और उसे चंगा करता है। कई लोग इस चमत्कार से आश्चर्यचकित होते हैं, जबकि कई लोग अचम्भा करते हैं कि यीशु पापों को कैसे क्षमा कर सकते हैं।

हम इससे क्या सीखते हैं?

विश्वास चाहे व्यक्तिगत रूप से या दूसरों के द्वारा आपके लिए किया गया हो, परमेश्वर से चंगाई और उद्धार प्राप्त करने में महत्वपूर्ण है। यीशु मसीह इस दुनिया में सिर्फ हमारे शरीरों को चंगा करने के लिए ही नहीं, बल्कि हमारे पापों को क्षमा करने और हमारी आत्माओं को चंगा करने के लिए आए।

इसे हम कैसे लागू कर सकते हैं?

1. जैसे लकवे से पीड़ित व्यक्ति के चार दोस्तों ने उसे यीशु के पास लाने के लिए कई बाधाओं को पार किया, हमें भी दूसरों को मसीह के पास लाने के लिए हर सम्भव प्रयास करना चाहिए।
2. हमें दूसरों की चंगाई और उद्धार के लिए अवश्य ही विश्वास करना चाहिए ।
3. परमेश्वर की चंगाई का काम संपूर्ण रूप से है– शरीर, प्राण और आत्मा की चंगाई।

23 मार्च 2025	**21वाँ रविवार**	**महान् लेन्ट का चौथा रविवार (कनानी स्त्री को चंगाई)**	
वचन का पाठ			
यशायाह 56:1–7	भजन 19	रोमियों 7:14–25	संत मत्ती 15:21–28

सुसमाचार विषयः महान् विश्वास का एक उदाहरण

यह पाठ किस के विषय में है ?

एक माँ जिसकी बेटी शैतानों के द्वारा सतायी गई है, यीशु के पास अपनी बेटी के लिए दया और चंगाई के लिए आती है। मसीह के चंगा करने की क्षमता पर उसके विश्वास की सराहना यीशु ने किया।

हम इससे क्या सीखते हैं?

परमेश्वर हमेशा हमारे विश्वास से प्रसन्न होते हैं (इब्रानियों 11:6)। और जब हम विश्वास और भरोसे के साथ उसके पास जाते हैं, तो वह हमारी प्रार्थनाओं को कभी अनुत्तरित नहीं छोड़ेंगे और हम पर दया करेंगे।

इसे हम कैसे लागू कर सकते हैं?

1. यदि हमारी प्रार्थनाओं का उत्तर नहीं मिलता है तो हमें हार नहीं माननी चाहिए। लेकिन, जैसा कि इस माँ के उदाहरण में है, हमें विश्वास में दृढ़ रहना चाहिए।
2. हमारे प्रियजनों के लिए यीशु पर विश्वास और भरोसा रखें, कि वह उन पर दया करें।
3. प्रार्थना करें और अपने विश्वास को बढ़ाएँ, ताकि आप परिस्थितियों की परवाह किए बिना परमेश्वर पर भरोसा कर सकें।

25 मार्च 2025, मंगलवार			
थियोटोकोस (प्रभु की माता) को उद्घोषणा का पर्व (*सुबोरो*)			
वचन का पाठ			
उत्पति 28:10–22	भजन 40:5–10	इब्रानियों 2:11–18	संत लूका 1:24–38

सुसमाचार विषय: आज्ञाकारिता की आत्मा विकसित करें

यह पर्व किस के विषय है?

यह पर्व स्वर्गदूत जिब्राईल द्वारा कुवाँरी मरियम के लिए यीशु मसीह के जन्म के विषय में घोषणा का पर्व है। यह संसार के उद्धार के लिए परमेश्वर द्वारा अपने पुत्र को भेजने की प्रतिज्ञा के पूरा होने की शुरूआत है।

हम इस पर्व से क्या सीखते हैं?

उद्धार परमेश्वर की पहल थी। ख्रीष्ट–जन्म–घोषणा और इस प्रकार देहधारण को मानवता के उद्धार के लिए स्वयं परमेश्वर ने योजना बनाई थी। फिर भी, उसी समय, हम यह भी देखते हैं कि जब माता मरियम परमेश्वर की इच्छा को स्वीकार करती है तो इसमें मानवीय प्रतिउत्तर भी शामिल था।

इसे हम कैसे लागू कर सकते हैं?

1. माता मरियम द्वारा हमारे सामने रखे गए महान् उदाहरण का अनुकरण करें और आज्ञाकारिता की आत्मा को विकसित करें तब भी जब उनकी इच्छा कठिन या अनिश्चित जान पड़ती हो।
2. परमेश्वर के निर्देशों को विनम्रता से स्वीकार करना और उन पर समर्पित रहना, उद्धार और आशिष का मार्ग है।
3. हमें पृथ्वी पर परमेश्वर के कार्य में सक्रिय रूप से भाग लेने के लिए बुलाया गया है– शब्दों और कार्यों दोनों में – यह जानते हुए कि परमेश्वर मानव सहयोग के माध्यम से काम करते हैं।

30 मार्च 2025	22वाँ रविवार	महान् लेन्ट का पाँचवाँ रविवार (अपंग स्त्री की चंगाई)

वचन का पाठ

यशायाह 50:1–5	भजन 107:1–3, 17–22	1 पतरस 3:8–16	संत लूका 13:10–17

सुसमाचार विषय: परमेश्वर चाहता है कि हम दयालु बनें

यह पाठ किस के विषय में है?

सब्त के दिन यीशु एक स्त्री को चंगा करते हैं। जब आराधनालय के क्रोधित शासक ने यीशु पर उनकी परंपरा को तोड़ने का आरोप लगाया, तो यीशु उनके पाखंड का उजागर करते हैं।

हम इससे क्या सीखते हैं?

हालाँकि नियम और कानून अच्छे हैं, लेकिन वे बाते हमें अपने आस–पास के लोगों की ज़रूरतों के प्रति अंधा और असंवेदनशील न बना दे। मानव कल्याण हमारे सभी आत्मिक अनुशासनों का केन्द्र बिंदु होना चाहिए।

इसे हम कैसे लागू कर सकते हैं?

1. प्रार्थना, उपवास और दयादान देना जैसे आत्मिक अनुशासन (नियम) जो हम महान् लेंट के दौरान अपनाते हैं, हमें दीन बनाने चाहिए। जांचें और मूल्यांकन करें। क्या ये अनुशासन मुझे दूसरों के प्रति अधिक दयालु बना रहे हैं? (संत मत्ती 12:7)।
2. आइये, हम फरीसियों की तरह घमंडी और पाखंडी न बनें, परन्तु अपने आत्मिक घमंड के लिए पश्चाताप करें और परमेश्वर से कहें, एक बार फिर आपको छोटे बच्चों की तरह बना दे (संत मत्ती 18:3)।
3. महान् लेंट के दौरान कलीसिया के साथ जुड़कर आत्मिक अनुशासन का लगातार पालन करें।

6 अप्रेल 2025	23वाँ रविवार	महान् लेन्ट का छठा रविवार (अंधे व्यक्ति की चंगाई)	
वचन का पाठ			
व्यवस्थाविवरण 25:13–16, 26:1–13	भजन 119:9–16	इफिसियों 5:1–14	संत यूहन्ना 9:1–41

सुसमाचार विषयः दृष्टि देना

यह पाठ किस के विषय में है?

यीशु एक ऐसे व्यक्ति को चंगा करते हैं जो जन्म से अंधा था। फिर वह अविश्वासी फरीसियों के सामने गवाही देता है कि परमेश्वर ने उसके लिए क्या किया है। अंत में यीशु स्वयं को उस मनुष्य के सामने जिसने दृष्टि पायी थी, प्रकट करते हैं।

हम इससे क्या सीखते हैं?

किसी के स्वयं का पाप या उसके माता–पिता का पाप हमेशा दुःख और बीमारी का कारण नहीं होता है। इस रचनात्मक चमत्कार के माध्यम से, हम देखते हैं कि यीशु वास्तव में परमेश्वर थे और जो व्यक्ति चंगा हो गया था। उससे हम सीखते हैं कि एक प्रभावी मसीही गवाह कैसे बनें।

इसे हम कैसे लागू कर सकते हैं?

1. यीशु के विषय में हमारी गवाही सताव और विरोध को आमंत्रित कर सकती है।
2. हर परिस्थिति में यीशु के लिए दृढ़ता से खड़े रहने के लिए निर्भीकता, साहस, आत्मविश्वास के लिए प्रार्थना करें।
3. परमेश्वर ने हमारे लिए जो किया है हमें उसे दूसरों को अवश्य रूप से बताना चाहिए ताकि अन्य लोग देख सकें कि यीशु वास्तव में कौन हैं।

13 अप्रेल 2025	24वाँ रविवार		होशन्ना/खजूर रविवार
खजूर रविवार का पर्व			
वचन का पाठ			
मीका 4:1–5	भजन 118:1–2, 19–29	रोमियों 8:18–25	संत यूहन्ना 12:12–19

सुसमाचार विषयः सेवक राजा

यह पर्व किस के विषय में है?

यीशु गधे पर सवार होकर यरूशलेम में प्रवेश करते हैं और एक विशाल भीड़ खजूर के पत्तों के साथ और होसन्ना पुकारते हुए एक राजा की तरह उनका स्वागत करती है।

हम इस पर्व से क्या सीखते हैं?

पवित्र सप्ताह में प्रवेश करने से ठीक पहले, पृथ्वी पर यीशु के जीवन का अंतिम सप्ताह, जिसमें यीशु, 'मसीह' के विषय में भविष्यवाणियों को पूरा करता है। लोग यीशु को ऐसे व्यक्ति के रूप में देखते हैं जो उन्हें राजनीतिक उत्पीड़न से छुटकारा देने आया है। लेकिन एक सांसारिक राजा की तरह घोड़े के बजाए गधे पर सवार होकर आते हुए यीशु उस अनंत राज्य की ओर इशारा करते हैं जिसे वे स्थापित करने आए हैं।

इसे हम कैसे लागू कर सकते हैं?

1. आइये, हम नम्र बनें और मसीह की तरह दूसरों की सेवा करें। उन्होंने कहा और प्रदर्शित किया कि सबसे बड़ा वही है जो सबका सेवक है। वह हमारा सेवक–राजा है।

2. आश्चर्यचकित न हों यदि जो लोग अभी हमारा स्वागत करते हैं और वे बाद में हमारे खिलाफ हो जाएं। ऐसा ही हमारे स्वामी यीशु मसीह के साथ भी घटित हुआ।

3. अपना भरोसा और आशा अपने महिमामय भविष्य पर रखना सीखें, न कि वर्तमान की महिमा या कष्टों पर।

20 अप्रेल 2025	25वाँ रविवार पर्वों का पर्व: ईस्टर	ईस्टर रविवार (कीमथो)

वचन का पाठ			
प्रेरितों के काम 2:22–36	भजन 16	1 कुरिन्थियों 15:1–19	संत मत्ती 28:1–20

सुसमाचार विषयः मृत्यु की हार

यह पर्व किस के विषय में है?

यीशु के शिष्य उसके पुनरूत्थान तथा मृत्यु की हार के गवाह बनते हैं जबकि यीशु का विरोध करनेवाले सच्चाई को छिपाने की कोशिश करते हैं। बाद में, यीशु अपने शिष्यों को महान् आदेश देते हैं।

हम इस पर्व से क्या सीखते हैं?

ईस्टर इतिहास की सबसे महान् घटना है– क्योंकि यीशु ने मृत्यु को हराया था! बगैर पुनरूत्थान हमारा विश्वास व्यर्थ है (1 कुरिन्थियों 15:14)। और मसीह का पुनरूत्थान जो हमें साहस देता है, उस के साथ हमें सभी देशों में जाना चाहिए।

इसे हम कैसे लागू कर सकते हैं?

1. हमें मृत्यु से जरा भी डरने की ज़रूरत नहीं है क्योंकि यीशु ने मृत्यु को हरा दिया है।
2. इस पर्व के काल में हम एक–दूसरे से कहते हैं: मसीह जी उठा हैं! वह सचमुच जी उठा है ।
3. हमें अपनी आशा का यह सन्देश दूसरों के साथ बाँटना चाहिए।

27 अप्रैल 2025	**26$^{वाँ}$ रविवार**		**नवीन रविवार** **युवा रविवार–*विशेष दान***
वचन का पाठ			
यशायाह 40:9–15	भजन 133	2 तीमुथियुस 2:1–13	संत यूहन्ना 20:19–31

सुसमाचार विषय: हमारे डरों और संदेहों पर विजय पाना

यह पाठ किस के विषय में है?

पुनरुत्थित यीशु भयभीत शिष्यों को दिखाई देते हैं। वह उन्हें अपनी शांति देता है, उन्हें पवित्र आत्मा की प्रतिज्ञा प्रदान करते और पापों को क्षमा करने की सामर्थ्य देते हैं। वह दूसरी बार दिखाई देते हैं, संत थोमा के संदेह को दूर करते हैं, जो उन्हें 'मेरे प्रभु और मेरे परमेश्वर' के रूप में अंगीकार करते हैं

हम इससे क्या सीखते हैं?

हमारे साथ पुनरूत्थित मसीह की उपस्थिति हमारे सभी भय को दूर कर देती है। यीशु अपने शिष्यो को याजकीय सेवकाई को जारी रखने का आदेश देते हैं और थोमा के संदेह को विश्वास की गहरी स्वीकारोक्ति में बदलते हैं।

इसे हम कैसे लागू कर सकते हैं?

1. क्या हम भयभीत हैं? याद रखें कि पुनरुत्थित मसीह हमारे साथ हैं! (संत मत्ती 28:20)।
2. क्या हम संदेहात्मक है? जब हम इसे अंगीकार कर लेते हैं तो परमेश्वर हमें अधिक विश्वास की ओर ले जाने के लिए इनका उपयोग कर सकते हैं।
3. जो भयभीत और संदिग्ध प्रतीत होते हैं, उनकी उपेक्षा, आलोचना या न्याय न करें। परमेश्वर उन्हें बदल सकते हैं और बिल्कुल अपने शिष्यों की तरह अपनी महिमा के लिए उनका उपयोग कर सकते हैं।

   * संत थोमा, जो संदेह करता था, बाद में परमेश्वर द्वारा कई देशों में, विशेष रुप से भारत में, यीशु मसीह को सुसमाचार फैलाने के लिए उपयोग किए गए, जहाँ उन्होंने एक शहीद के रूप में अपने प्राणों की आहुति दी।

4 मई 2025	**27$^{\text{वाँ}}$ रविवार**	**नवीन रविवार के पश्चात् पहला रविवार**	
वचन का पाठ			
यहोशू 6:9–21	भजन 4	इफिसियों 6:10–24	संत यूहन्ना 21:1–14

सुसमाचार विषयः हम अपनी बुलाहट को कभी न छोड़ें

यह पाठ किस के विषय में है?

शिष्यों का पूरी रात मछली पकड़ने में असफल रहने के बाद, पुनरूत्थित मसीह उन्हें मछलियों को अद्भुत रीति से पकड़ने में अगुवाई करता है और स्वयं को उनके सामने प्रकट करता है।

हम इससे क्या सीखते हैं?

यह आश्चर्यकर्म शिष्यों को यीशु द्वारा किये गये पहले आश्चर्यकर्म का स्मरण दिलाता है (संत लूका 5:1–11), और इस प्रकार उन्हें उनकी बुलाहट का स्मरण दिलाता है – मनुष्यों के पकड़नेवाले बनना (संत मत्ती 4:19)। ढेरों मछलियों का पकड़ा जाना भी शिष्यों द्वारा लोगों को परमेश्वर के राज्य में लाने की एक प्रतीक है।

इसे हम कैसे लागू कर सकते हैं?

1. यदि आप अपनी बुलाहट से पीछे हटने की परीक्षा में पड़ते हैं, तो यीशु हमें मनुष्यों के पकड़नेवाले बनने की हमारी बुलाहट की याद दिला रहे है।
2. हम जो उसके शिष्य हैं हमारे माध्यम से ही पूरी मानवजाति यीशु के बारे में अवश्य रूप से जानना चाहिए।
3. उन लोगों के लिए प्रार्थना करें जो अपने जीवन में मसीह की बुलाहट से पीछे हट गए हैं, ताकि वे उसके प्रेम और बुलाहट में लौट आएं।

11 मई 2025	28$^{वाँ}$ रविवार	नवीन रविवार के पश्चात् दूसरा रविवार

वचन का पाठ

प्रेरितों के काम 4:8–21	भजन 100	इब्रानियों 3:1–13	संत यूहन्ना 21:15–22

सुसमाचार विषयः यीशु हमें पुनःस्थापित करता है

यह पाठ किस के विषय में है?

यीशु संत पतरस को पुनःस्थापित करते हैं जिसने तीन बार उनका इनकार किया था (संत लूका 22:31), और भविष्यवाणी की कि वह भविष्य में अपने स्वामी के लिए कैसे अपना जीवन न्यौछावर कर देगा।

हम इससे क्या सीखते हैं?

यीशु सबको पुनःस्थापित करना चाहता है, यहां तक कि उसे भी जो उसका इनकार करता है और उसे ही सर्वोच्च जिम्मेदारी देता है जैसा कि हम देखते हैं कि संत पतरस को अपनी भेड़ों को चराने की जिम्मेदारी देता है। यीशु का प्रेम किसी को भी बदल सकता है – ठीक वैसे ही जैसे संत पतरस को इतना बदल दिया कि वह अपने स्वामी के लिए अपना जीवन बलिदान करने को तैयार था।

इसे हम कैसे लागू कर सकते हैं?

1. यीशु के प्रेम की पहुंच से कोई भी परे नहीं है।
2. यदि हम पश्चाताप करते हैं और उसके प्रेम को स्वीकार करते हैं, तो यीशु हमें अपने शिष्यों के समूह में वापस बहाल कर देगा।
3. प्रार्थना करें और कड़ी मेहनत करें कि हम अपनी मृत्यु में भी यीशु के वफादार गवाह बनें।

18 मई 2025	29वाँ रविवार	नवीन रविवार के पश्चात् तीसरा रविवार	
वचन का पाठ			
निर्गमन 34:4-12	भजन 22:25-31	1 यूहन्ना 5:13-21	संत लूका 24:13-35

सुसमाचार विषयः पवित्रशास्त्र और प्रभु-भोज यीशु को और अधिक जानने के लिए हमारी आंखें खोल देते हैं।

यह पाठ किस के विषय में है?

इम्माउस के मार्ग पर दो शिष्यों के साथ चलते हुए, यीशु ने सबसे पहले मसीह से संबंधित पवित्रशास्त्र के वचनों से समझाते हैं। फिर जैसे वह उनके साथ रोटी तोड़ता है, अपने आप को उन्हें प्रकट करता है।

हम इससे क्या सीखते हैं?

जब हम पवित्रशास्त्र को पढ़ते, सुनते और हमे उचित रीति से सिखाया जाता हैं, तो यह हमें कायल करेगा और हमें मसीह के पास लाएगा। हम यह भी सीखते हैं कि, जब हम पवित्र प्रभु-भोज़ (रोटी तोड़ने) में भाग लेते हैं, तो यीशु को जानने के लिए हमारी आँखें खुल जाएंगी।

इसे हम कैसे लागू कर सकते हैं?

1. पवित्र शास्त्र को पढ़ना, सुनना और सीखना हमारी आदत होनी चाहिए।
2. जब हम निराश या भ्रमित हों, ठीक इन दो शिष्यों की तरह, पवित्र शास्त्र को पढ़ने का निाचय करें। यह हमें कायल करेगा और हमें यीशु की ओर इंगित करेगा।
3. हमें पवित्र प्रभु-भोज़ में नियमित रूप से भाग लेना चाहिए। इसमें और इसके माध्यम से, यीशु को और अधिक जानने और उसके दिव्य स्वभाव का हिस्सा बनने के लिए हमारे हृदय की आंखें खुल जाएंगी (2 पतरस 1:4)।

25 मई 2025	30वाँ रविवार	नवीन रविवार के पश्चात् चौथा रविवार

वचन का पाठ

यशायाह 54:1-8	भजन 98	1 पतरस 3:17-22	संत लूका 9:51-62

सुसमाचार विषयः यीशु के शिष्य बनने की कीमत

यह पाठ किस के विषय में है?

जैसे ही यीशु यरूशलेम जाने और कष्ट सहने के लिए दृढ़ होते है, वहां तीन व्यक्ति होते हैं जो उनका अनुसरण करने की इच्छा व्यक्त करते हैं। यीशु उन्हें बताते है कि उनके पीछे चलने की उन्हें क्या कीमत चुकानी पड़ेगी।

हम इससे क्या सीखते हैं?

यद्यपि हम यीशु का अनुसरण करने की इच्छा कर सकते हैं, बहुधा हम इसकी कीमत नहीं आँकते। लेकिन यहां यीशु हमें इसकी कीमत को समझते हुए और पूरी निष्ठा के साथ उनका अनुसरण का समर्पण करने के लिए चुनौती दे रहे हैं।

इसे हम कैसे लागू कर सकते हैं?

1. यदि हम सांसारिक सुरक्षा के विषय में सोचते हैं, तो हम पूरे दिल से यीशु का अनुसरण नहीं कर पाएंगे (वचन 58)।
2. समझें कि मसीह के प्रति हमारे समर्पण को पूरा करने में हमारे रास्ते में कुछ भी नहीं आनी चाहिए, यहाँ तक कि हमारे माता-पिता भी नहीं (वचन 59)।
3. हमें पीछे नहीं हटना चाहिए, बल्कि बिना देर किए आगे बढ़ना चाहिए (वचन 61)।

29 मई 2025, बृहस्पतिवार **हमारे प्रभु के स्वर्गारोहण का पर्व**			
वचन का पाठ			
प्रेरितों के काम 1:1-11	भजन 47	इफिसियों 1:15-23	संत लूका 24:36-53

सुसमाचार विषयः मसीह वापस आएगा, ठीक वैसे ही जैसे वह स्वर्ग गया था

यह पर्व किस के विषय में है?

यह पर्व हमारे प्रभु यीशु मसीह के पुनरुत्थान के बाद अपने शिष्यों के साथ 40 दिन बिताने के पश्चात् उनके स्वर्गारोहण को स्मरण दिलाता है।

हम इस पर्व से क्या सीखते हैं?

आशा का पर्व - यीशु के पुनरुत्थान और स्वर्गारोहण के कारण, हम मृत्यु को आशा के साथ देखते हैं - स्वर्ग का द्वार के रूप में।

आनंद का पर्व - क्योंकि यीशु ने पवित्र आत्मा को हमारे अंदर रहने और हमें सच्चाई और जीवन के मार्ग पर मार्गदर्शन करने के लिए भेजा है।

प्रतीक्षा का पर्व - क्योंकि यह हमें यीशु के 'द्वितीय आगमन' की याद दिलाता है। इसलिए हम इंतजार करते हैं और खुद को शुद्ध और पवित्र रखने की कोशिश करते हैं, ताकि जब वह आए, तो वह हमें वफादार सेवकों के रूप में पाए जो उसके आने का इंतजार कर रहे थे।

इसे हम कैसे लागू कर सकते हैं?

1. अब मौत से डरने की ज़रूरत नहीं!
2. पवित्र आत्मा से कहें कि वह हमें हमारे प्रभु यीशु के प्रभावशाली गवाह बनने के लिए सशक्त बनाये।
3. यीशु के दूसरे आगमन के लिए हमेशा तैयार रहें।

1 जून 2025	31वाँ रविवार		पेन्तीकुस्त के पहले का रविवार
वचन का पाठ			
यहोशू 1:5–9	भजन 1	1 कुरिन्थियों 7:1–2, 25–34, 9:1–10	संत यूहन्ना 17:13–26

सुसमाचार विषय: एकता के लिए प्रार्थना

यह पाठ किस के विषय में है?

यीशु को पकड़वाए जाने और उनके परखे जाने हेतु ले जाने से ठीक पहले, वे अकेले पिता से प्रार्थना करते हैं – पहले अपने शिष्यों के लिए और फिर उन लोगों के लिए जो शिष्यों के माध्यम से उस पर विश्वास करेंगे।

हम इससे क्या सीखते हैं?

यद्यपि हम मसीही इस संसार में रहते हैं, पर हम इस संसार के नहीं हैं। यीशु की सबसे बड़ी प्रार्थना थी कि 'हम सब एक हों' – अर्थात् विश्वासियों के बीच सच्ची एकता के लिए, क्योंकि इसी तरह से दूसरे लोग यीशु पर विश्वास करेंगे।

इसे हम कैसे लागू कर सकते हैं?

1. हमें संसार को यीशु के विषय में जानने हेतु मदद करने के लिए संसार में भेजा गया है (वचन 18)।
2. यद्यपि संसार हम से बैर करेगा, तौभी परमेश्वर दुष्ट से हमारी रक्षा करेगा (वचन 14,15)।
3. हमें एक–दूसरे के साथ एकजुट होने का प्रयास अवश्य करना चाहिए, इसी तरह से अन्य लोग यीशु को जान सकेंगे (वचन 21) और यह कि हम उसके हैं।

8 जून 2025	**32**		

8 जून 2025 — **32वाँ रविवार** — **पिन्तेकुस्त (ईस्टर के पश्चात् 50वाँ दिन)**

मिशनस् रविवार-*विशेष दान*

वचन का पाठ

प्रेरितों के काम 2:1-21	भजन 104:24-34, 35ब	गलातियों 5:16-26	संत यूहन्ना 16:1-15

सुसमाचार विषय: पवित्र आत्मा हमारा सहायक है

यह पाठ किस के विषय में है?

यीशु अपने शिष्यों से कहता है कि वह उन्हें छोड़कर जा रहे हैं और तब जो पवित्र आत्मा आएगा, हमेशा उनके साथ रहेगा (संत यूहन्ना 14:16), और उन्हें सभी सत्य मार्ग में चलाएगा (संत युहन्ना 16:13)।

हम इससे क्या सीखते हैं?

पवित्र आत्मा हमारा सहायक है - हमें सांत्वना देनेवाला, हमारा सलाहकार और हमारा मार्गदर्शक। पवित्र आत्मा हमारे साथ उपस्थित है और सत्य का आत्मा है जो परमेश्वर के विषय में ज्ञात कराता है और दुनिया में पाप के प्रति कायलता लाता है।

इसे हम कैसे लागू कर सकते हैं?

1. जब हम यीशु का अनुसरण करते हैं, तो हम सताव की उम्मीद कर सकते हैं (वचन 1-3)।
2. जब हमें लगे कि हम अकेले हैं, तो याद करें कि सांत्वना देनेवाले, हमारे सहायक, पवित्र आत्मा हमेशा हमारे साथ है। (वचन 6, 7)।
3. पवित्र आत्मा हमें पूरी दुनिया के लिए सत्य का एक सामर्थी गवाह बनने हेतु सशक्त बनाने के लिए दिया गया है (प्रेरित 2:11)।

15 जून 2025	33वाँ रविवार		पिन्तेकुस्त के पश्चात् पहला रविवार
वचन का पाठ			
यिर्मयाह 29:10–16	प्रेरितों के काम 17:10–15	2 कुरिन्थियों 5:14–6:10	संत यूहन्ना 6:26–35

सुसमाचार विषय: यीशु, जीवन की रोटी

यह पाठ किस के विषय में है?

कई लोगों ने यीशु का अनुसरण किया जब उसने केवल पाँच रोटियों के साथ महिलाओं और बच्चों के अतिरिक्त 5000 पुरुषों को भोजन खिलाया था। यीशु उन्हें ऐसे भोजन की तलाश करने का निर्देश देते हैं जो सर्वदा के लिए बना रहता है, अर्थात् वह स्वयं, और वह घोषणा करता है कि वह स्वर्ग से आई सच्ची रोटी हैं, परमेश्वर की रोटी जो संसार को जीवन देती है।

हम इससे क्या सीखते हैं?

चिह्नों की तलाश मत करें; परन्तु यीशु की तलाश करें जिसकी ओर ये चिह्न इशारा करते हैं – उस पर विश्वास करें और वह हमारी आध्यात्मिक भूख और प्यास को हमेशा के लिए दूर करेगा।

इसे हम कैसे लागू कर सकते हैं?

1. जब हम आशिषों और चमत्कारों को पाते हैं, तब आशिषों के स्रोत परमेश्वर को न भूलें।
2. यीशु का अनुसरण करें और उसकी खोज करें क्योंकि वही अनन्त जीवन का स्रोत है।
3. नियमित रूप से पवित्र प्रभु–भोज़ में भाग लें, क्योंकि यीशु इस अनुष्ठान के माध्यम से स्वयं को हमें देते हैं (संत यूहन्ना 6:51, 53)।

22 जून 2025	34वाँ रविवार	पिन्तेकुस्त के पश्चात् दूसरा रविवार

वचन का पाठ

दानियेल 6:25–28	प्रेरितों के काम 4:23–31	इफिसियों 2:11–22	संत मत्ती 10:5–16

सुसमाचार विषय: प्रचार करने और चंगा करने के लिए भेजे गए

यह पाठ किस के विषय में है? (संत लूका 9:1–6 भी देखें)

यीशु स्पष्ट निर्देश देते है – क्या लेना है, कहाँ जाना है, कैसे प्रतिउत्तर देनी है, यहाँ तक कि वह अपने शिष्यों को परमेश्वर के राज्य का प्रचार करने और बीमारों को चंगा करने के लिए भेजते है।

हम इससे क्या सीखते हैं?

यीशु की सेवकाई उपदेश देना और चंगा करना था। इसे अब उनके शिष्यों के साथ साझा किया गया है, जिन्हें इस उद्देश्य को पूर्ण करने हेतु एकाग्रचित्त होकर 'जाने' की ज़रूरत है और जो कुछ उन्होंने यीशु से प्राप्त किया है उसे मुफ्त में बाँटना है।

इसे हम कैसे लागू कर सकते हैं?

1. यीशु के शिष्यों के रूप में, हमें अपने शब्दों और कार्यों द्वारा प्रचार करने और चंगा करने के लिए बुलाया गया है।
2. हमें अपने उद्देश्य से विचलित नहीं होना है। परमेश्वर हमारी सभी ज़रूरतों का ध्यान रखेगा।
3. हम उन लोगों के लिए शांति और क्षमा के वाहक हैं जो इसे ग्रहण करते हैं।

29 जून 2025	35वाँ रविवार	पिन्तेकुस्त के पश्चात् तीसरा रविवार सेमीनरी रविवार—*विशेष दान*

वचन का पाठ

यिर्मयाह 3:1-5	प्रेरितों के काम 13:26-39	गलातियों 6:10-18	संत यूहन्ना 6:35-46

सुसमाचार विषयः पिता की इच्छा पूरी करने के लिए भेजे गए

यह पाठ किस के विषय में है?

इस अनुच्छेद में, यीशु एक बार फिर कहते है कि वे वह रोटी है जो पिता की इच्छा पूरी करने के लिए स्वर्ग से आई है, जिससे यहूदी भ्रमित हो जाते हैं कि वह वास्तव में कौन है।

हम इससे क्या सीखते हैं?

हम सीखते हैं कि यीशु दिव्य हैं, कि वह परमेश्वर का पुत्र है, जीवन देने वाली रोटी, जो स्वर्ग से भेजी गई है। पिता परमेश्वर की इच्छा है कि सब लोगों को उसके पुत्र यीशु मसीह के माध्यम से अनन्त जीवन प्राप्त हो।

इसे हम कैसे लागू कर सकते हैं?

1. यीशु की तरह, हमें अपने जीवन में पिता की इच्छा पूरी करने के लिए अपनी इच्छा समर्पित करनी चाहिए।
2. दूसरों को यीशु को देखने और उस पर विश्वास करने में मदद करें – यही एकमात्र मार्ग है जिससे उन्हें अनन्त जीवन मिल सकता है।
3. पवित्र प्रभु-भोज के अनुष्ठान में भाग लेने से अनंत जीवन मजबूत और पोषित होता है। यूकरिस्ट (प्रभु-भोज) में यीशु स्वयं को, रोटी और दाखरस के रूप में हमें देते हैं।

6 जुलाई 2025	36वाँ रविवार	पिन्तेकुस्त के पश्चात् चौथा रविवार	
वचन का पाठ			
यशायाह 65:8-12	प्रेरितों के काम 6:1-7	1 कुरिन्थियों 16:14-22	संत लूका 10:1-16

सुसमाचार विषय: कटनी और मज़दूरों की वास्तविकता

यह पाठ किस के विषय में है?

यीशु ने अपने 70 शिष्यों को प्रचार और चंगा करने के लिए भेजते हैं। वह उन्हें स्मरण कराते है कि उन्हें इस सेवकाई को अक्सर खतरे के मध्य में भी जारी रखना है। मसीह और उसके कार्यों को तिरस्कृत करने के खतरे के विषय में भी यीशु उन्हें चेतावनी देते हैं।

हम इससे क्या सीखते हैं?

यीशु कहते हैं कि खेत पक चुके है (जिसका सरल अर्थ यह है कि दुनिया में बहुतेरे लोग हैं जिन्हें अभी भी सुसमाचार सुनने और उस पर प्रतिउत्तर देने की जरूरत है)। और इसलिए, हमें 'जाने के' समर्पण करने हेतु और अधिक मज़दूरों के लिए प्रार्थना करने की आवश्यकता है। इस उददेश्य को लेकर हम भेड़ियों के बीच मेमनों की तरह जा रहे हैं।

इसे हम कैसे लागू कर सकते हैं?

1. मसीह के कार्य को पूरा करने के लिए और अधिक सेवकों को तैयार करने के लिए परमेश्वर से लगातार, प्रयत्नशील होकर और नियमित रूप से प्रार्थना करें।

2. हमें सताव के लिए तैयार रहना चाहिए और इसलिए सुसमाचार प्रचार में अत्यंत बुद्धिमान होना चाहिए।

3. आइये, हम सब लोग जिन्होंने परमेश्वर के सामर्थी कार्यों को देखा और अनुभव किया है, याद रखें कि हम नम्र रहकर पश्चातापपूर्ण जीवन जीएं।

13 जुलाई 2025	37वाँ रविवार	पिन्तेकुस्त के पश्चात् पाँचवाँ रविवार	
वचन का पाठ			
यशायाह 40:27–31	प्रेरितों के काम 9:10–18	2 कुरिन्थियों 5:14–20	संत लूका 9:10–17

सुसमाचार विषय: हमारी अयोग्यता में परमेश्वर की सामर्थ्य

यह पाठ किस के विषय में है? (संत यूहन्ना 6:4–14 भी देखें)

सभी चार सुसमाचारों में लिखित इस चमत्कार में, यीशु केवल पाँच रोटियों और दो मछलियों से 5000 पुरुषों (साथ ही बच्चों और महिलाओं) को भोजन खिलाते हैं, जो मानवीय सीमाओं से परे परमेश्वर की क्षमता का प्रदर्शन करता है।

हम इससे क्या सीखते हैं?

जब हमारे सामने कोई ज़रुरत आ पड़ती है और हमारे पास उसे पूरा करने के लिए कोई संसाधन नहीं होते हैं, तो हमारे पास जो कुछ है वह यीशु को दे दें। उतना परमेश्वर के लिए उसे बहुगुणित कर हमारी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए पर्याप्त से भी अधिक होगा।

इसे हम कैसे लागू कर सकते हैं?

1. जैसे उसने अपने शिष्यों को परखा, यीशु हमें परखेगा, यह जानने के लिए कि क्या हम उस पर भरोसा करते हैं।
2. जब कोई ज़रूरत पड़े तो चिंतित होने के बजाय उसे पूरा करने के लिए परमेश्वर पर भरोसा रखें।
3. जब परमेश्वर हमें दूसरों की ज़रूरतों को पूरा करने के लिए उपयोग करता है, तो वह हमारी ज़रूरतों को भी पूरा करेगा। याद रखें, सभी के खाने और तृप्त हो जाने के बाद 12 टोकरियाँ भरी हुई बची थीं।

20 जुलाई 2025	38वाँ रविवार	पिन्तेकुस्त के पश्चात् छठा रविवार	
वचन का पाठ			
यशायाह 14:22–27	प्रेरितों के काम 1:15–20	1 कुरिन्थियों 8:1–6	संत मत्ती 15:32–39

सुसमाचार विषयः परमेश्वर हमारी सारी भौतिक आवश्यकताओं को पूरा करने के योग्य है।

यह पाठ किस के विषय में है?

भीड़ को खिलाने के इस दूसरे चरण में, यीशु ने, यह देखते हुए कि उनके पास तीन दिनों से खाने के लिए कुछ भी नहीं है, एक और चमत्कार किया और सात रोटियों से महिलाओं और बच्चों के अलावा 4000 पुरुषों को भोजन खिलाया।

हम इससे क्या सीखते हैं?

यीशु हमारी आध्यात्मिक और भौतिक ज़रूरतों के विषय में भी चिंतित हैं। जब शिष्यों ने अपने पास थोड़ा-सा जो कुछ था उसे यीशु को दे दिया, तो यह उन सबकी सभी ज़रूरतों को पूरा करने के लिए पर्याप्त से अधिक था।

इसे हम कैसे लागू कर सकते हैं?

1. प्रार्थना करें कि हम लोगों को उसी तरस की दृष्टि से देखें जो यीशु में थी।
2. अगर हमारे पास सामने आयी ज़रूरतों को पूरा करने के लिए बहुत कम है तो निराश न हों। जो कुछ भी यीशु को दिया जाएगा वह हमारी सभी ज़रूरतों पूर्ति हेतु बढ़ाया जाएगा।
3. यीशु हम लोगों जो उसके शिष्यों के माध्यम से आस-पास के लोगों की ज़रूरतों को पूरा करना चाहता है। हम उनके हाथ और पैर हैं।

27 जुलाई 2025	39वाँ रविवार	पिन्तेकुस्त के पश्चात् सातवाँ रविवार	
वचन का पाठ			
यशायाह 57:15–19	प्रेरितों के काम 4:32–37	इफिसियों 2:11–22	संत मरकुस 3:20–30

सुसमाचार विषयः बुरी शक्तियों के ऊपर यीशु का अधिकार

यह पाठ किस के विषय में है?

जब यीशु ने दुष्टात्मा को निकाला, तो कुछ लोगों ने कहा कि उसने दुष्टात्माओं की शक्ति से ऐसा किया। यीशु ने उनसे सवाल किया कि एक दुष्ट साम्राज्य खुद को कैसे नष्ट कर सकता है, उन्होंने कहा कि वह एक सामर्थी व्यक्ति है जो एक बलवान द्वारा बंदी बनाए गए लोगों को छुड़ाने आया है (संत लूका 11:21, 22)।

हम इससे क्या सीखते हैं?

यीशु, परमेश्वर का पुत्र, बुरी शक्तियों द्वारा जकड़े लोगों को आज़ाद कराने के लिए आया था। परन्तु ऐसे अच्छे कार्यों को करते हुए भी, कई लोगों ने उनकी सामर्थ्य के स्रोत के साथ–साथ उनके इरादों को भी गलत समझा ।

इसे हम कैसे लागू कर सकते हैं?

1. हमें बुरी शक्तियों से डरने की ज़रूरत नहीं हैं। यीशु मसीह उन सभी शक्तियों से अधिक सामर्थी हैं।
2. दुष्ट द्वारा बंदी बनाए गए लोगों के छुड़ाए जाने के लिए यीशु के नाम में प्रार्थना करें।
3. जब कुछ लोग परमेश्वर के कार्यों को गलत समझते हैं, सवाल उठाते हैं या विरोध करते हैं, तो निराश न हों।

3 अगस्त 2025	**40वाँ रविवार**		**पिन्तेकुस्त के पश्चात् आठवाँ रविवार**
वचन का पाठ			
यशायाह 52:1–6	भजन 23	1 पतरस 2:4–10	संत यूहन्ना 6:47–59

सुसमाचार विषयः यीशु का जीवन दायक शरीर और लहू

यह पाठ किस के विषय में है?

इस खंड में यीशु पवित्र प्रभु–भोज के आधारभूत सिद्धांत की स्थापना कर रहे हैं।

हम इससे क्या सीखते हैं?

पवित्र युकेरिस्ट में, हम रहस्यमय तरीके से मसीह के मांस में से खाते हैं और उसके लहू में से पीते हैं। हालाँकि इसे समझना अत्यंत कठिन है; परन्तु जब रोटी और दाखरस को आशीषित रहस्यमय रूप से किया जाता है, तो यह मसीह का पवित्र देह और पवित्र लहू बन जाता हैं। इन पवित्र भेदों में जब हम विश्वास के साथ भाग लेते हैं, तो यह हमें आध्यात्मिक रूप से नया बनाता है और हमें अनंत जीवन प्रदान करता है।

इसे हम कैसे लागू कर सकते हैं?

1. पवित्र प्रभु–भोज़ कलीसिया का अधिकेंद्र है। यह ऐसा है कि मसीह हमारे साथ, हमारे बीच में है।
2. इसलिए, हमें दिव्य प्रभु–भोज़ के समीप हल्के में नहीं जाना चाहिए और न ही किसी भी कारण से इसे छोड़ना चाहिए।
3. आइये, हम बाहर जाएं और उन लोगों को साथ लाएं जो आध्यात्मिक रूप से मर रहे हैं, ताकि वे भी यीशु के जीवन देने वाली पवित्र देह और लहू का हिस्सा बन सकें।

6 अगस्त 2025, बुधवार हमारे प्रभु के रूपांतरण का पर्व			
वचन का पाठ			
व्यवस्थाविवरण 16:13–17	भजन 24	1 यूहन्ना 2:23–3:1	संत लूका 9:27–36

सुसमाचार विषय: मसीह की समानता में रूपांतरित होना

यह पर्व किस के विषय में है?

यह पर्व उस चमत्कार का स्मरण कराता है जिसमें हमारे प्रभु यीशु मसीह का रूपान्तरण हुआ था, उन्होंने अपने शिष्यों के समक्ष अपनी दिव्यता प्रकट की थी।

हम इस पर्व से क्या सीखते हैं?

रूपांतरण यीशु की दिव्य प्रकृति को प्रकट किया और यह कि वह परमेश्वर का प्रिय पुत्र है। हम मूसा को (जो मर चुका था) प्रकट होते और यीशु से बात करते देखते हैं। यह इस बात का प्रमाण है कि मृत्यु मनुष्यों के लिए अंत नहीं है, और जो संत मसीह में मर चुके हैं वे परमेश्वर के साथ लगातार बातें करते हैं। रूपांतरण हमें 'थियोसिस' का स्मरण कराता है – परमेश्वर हमें यीशु मसीह के स्वरूप में परिवर्तित करने हेतु हमारे अंदर काम कर रहे है, हम मनुष्यों का परमेश्वर के साथ एकता में एकीकृत होने की सम्पूर्ण प्रक्रिया है।

इसे हम कैसे लागू कर सकते हैं?

1. पवित्र अनुष्ठानों में भाग लेना, विशेषकर पवित्र प्रभु–भोज में, जो हमारे स्वभाव को बदलने में सहायक है।
2. हमें कलीसिया द्वारा दिए गए अभ्यास, जैसे प्रार्थना, उपवास और दान देना, वे हमारे स्वभाव को बदलने में मदद करते हैं।
3. हम अपने जीवन की कठिनाइयों का सामना इस आशा के साथ कर सकते हैं कि एक दिन हम परमेश्वर को आमने–सामने देखेंगे।

10 अगस्त 2025	41वाँ रविवार	रूपान्तरण के पश्चात् पहला रविवार	
वचन का पाठ			
व्यवस्थाविवरण 25:13–16	भजन 27	याकूब 4:7–5:6	संत मत्ती 21:28–32

सुसमाचार विषयः परमेश्वर की इच्छा पूरी करनेवाले बनें

यह पाठ किस के विषय में है?

यह दृष्टांत एक ऐसे व्यक्ति के विषय में है जिसके दो पुत्र थे। वह दोनों को अपने दाख की बारी में काम करने के लिए कहता है, परन्तु उन्होंने एक तरह से जवाब दिया और दूसरी तरह कार्य किया। यीशु इस उदाहरण का उपयोग यहूदी मुख्य याजकों और पुरनियों के पाखंड को दिखाने के लिए करते हैं।

हम इससे क्या सीखते हैं?

सिर्फ यूँ ही कुछ कहना पर्याप्त नहीं है, बल्कि सही समय पर सही काम करना महत्वपूर्ण है। हम यह भी सीखते हैं कि परमेश्वर उस पापी के ज्यादा करीब है जो उसकी दया की ज़रूरत जानता है, न कि आध्यात्मिक रूप से उस घमंडी के – जो सभी सही बातें कहते हैं, लेकिन उस पर अमल करने में असफल रहते हैं।

इसे हम कैसे लागू कर सकते हैं?

1. आइये, हम आत्म–धर्मी और अभिमानी न बनें, बल्कि उन पापियों की तरह बनें जो अपने पश्चाताप और दया की आवश्यकता को पहचानते हैं (संत लूका 18:13)।
2. हृदय और स्वभाव में नम्र बने रहने हेतु हर संभव प्रयास करें (1 पतरस 5:5ब)।
3. आइये, हम परमेश्वर की इच्छा पूरी करने वाले बनें, केवल वे ही स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करेंगे (संत मत्ती 7:21)।

15 अगस्त 2025, शुक्रवार
थियोटोकोस के डोर्मिशन (प्रभु की माता का स्वर्गवास) का पर्व *(शूनोयो)*

वचन का पाठ			
निर्गमन 3:1–6; 19:16–23	यहेजकेल 44:1–3	इब्रानियों 2:14–18; 9:3–12	संत लूका 11:22–28

सुसमाचार विषय: मृत्यु तो मात्र स्वर्ग का द्वार है

यह पर्व किस के विषय में है?

इस पर्व में प्रभु की माता मरियम के 'स्वर्गवास' का उत्सव मनाया जाता है।

हम इस पर्व से क्या सीखते हैं?

यह पर्व इस बात को स्मरण दिलाता है कि कलीसिया, प्रभु की माता मरियम से कितना प्यार करती थी और उनका सम्मान करती थी। हम सीखते हैं कि मृत्यु से डरने की ज़रूरत नहीं है, कि जो लोग मसीह में मरते हैं, उनके लिए मृत्यु एक आनंदमयी घटना है। हमें दिवंगत लोगों को कभी नहीं भूलना चाहिए, बल्कि उनकी याद को जीवित रखना चाहिए।

इसे हम कैसे लागू कर सकते हैं?

1. माता मरियम को जो सबसे महान् संत हैं – हम उनके आइकन को सम्मान देने के द्वारा उनका आदर करते है और उनसे प्रेम करते है, बिलकुल वैसे ही जैसे आरम्भ से कलीसिया ने किया है।
2. हमारी दिव्य आराधना विधि और विशेष दिनों में हमसे दूर चले गए दिवंगत संतों को याद करके, हम उनकी स्मृति को जीवित रखते हैं।
3. जो लोग हमसे दूर चले गए हैं, जैसे माता मरियम और हमारे प्रिय दिवंगत मेट्रोपोलिटन अथनासियस योहान, वे अब यीशु के साथ हैं और वे हमारे लिए मध्यस्थता कर रहे हैं।

   * जब हम संत मरियम को 'थियोटोकोस', जिसका अर्थ है (ईश्वर–वाहक) के रूप में सम्मान करते हैं, तो हम पुष्टि कर रहे हैं कि यीशु की दिव्यता और मानवता अलग–अलग नहीं हैं। बल्कि एक व्यक्ति है, जिसके दो स्वभाव हैं: दिव्य और मानवीय। यीशु परमेश्वर –मनुष्य थे।

17 अगस्त 2024	42वाँ रविवार	डोर्मिशन के पश्चात् पहला रविवार	
वचन का पाठ			
1 शमूएल 8:4–9	भजन 34:15–22	इफिसियों 6:10–17	संत लूका 6:39–45

सुसमाचार विषय: दूसरों पर दोष न लगाएँ; परन्तु दयालु बनें

यह पाठ किस के विषय में है?

यीशु एक दृष्टांत बताते हैं कि क्यों हमें दूसरों का न्याय नहीं करना चाहिए, बल्कि स्वयं का न्याय करना चाहिए।

हम इससे क्या सीखते हैं?

हम सीखते हैं दूसरों को दोषी न ठहरना, क्योंकि जिस तरह से हम दूसरों पर दोष लगाते हैं, वैसे ही हम पर भी दोष लगाया जायेगा (संत मत्ती 7:1)। हम यह भी सीखते हैं कि हमें क्षमा करना चाहिए और दयालु होना चाहिए।

इसे हम कैसे लागू कर सकते हैं?

1. जब हम किसी दूसरे पर दोषारोपण करने की परीक्षा में पड़ते हैं, तो हमें रुक जाना चाहिए और पश्चाताप करना चाहिए, क्योंकि हम स्वयं भी उन्हीं बातों के लिए दोषी हैं, जिन्हें हम दूसरों में देखते हैं।
2. हमें दूसरों को क्षमा करने में उदार होना चाहिए क्योंकि परमेश्वर ने हमें क्षमा किया है।
3. हमेशा 'यीशु की प्रार्थना' करें : प्रभु यीशु मसीह, परमेश्वर के पुत्र, मुझ पापी पर दया करें।

24 अगस्त 2025	43वाँ रविवार	डोर्मिशन के पश्चात् दूसरा रविवार	
वचन का पाठ			
उत्पति 6:3–12	भजन 12:1–7	1 थिस्सलुनीकियों 5:1–11	संत लूका 11:9–20

सुसमाचार विषय: निरंतर प्रार्थना

यह पाठ किस के विषय में है?

प्रार्थना के विषय में शिक्षा देते हुए, यीशु कहते हैं कि परमेश्वर हमारी उन निरंतर प्रार्थनाओं का उत्तर देंगे जो उनकी दृष्टि में अच्छी हैं। जब यीशु एक दुष्टात्मा से ग्रस्त व्यक्ति को चंगा करता है, तो बहुत से लोग आश्चर्यचकित हो जाते हैं, जबकि कुछ लोग यीशु की परीक्षा लेते हैं और उस पर चमत्कार करने हेतु दुष्टात्मा की शक्तियों का उपयोग करने का आरोप लगाते हैं।

हम इससे क्या सीखते हैं?

हमें उन चीज़ों के लिए प्रार्थना करना नहीं छोड़ना चाहिए जो परमेश्वर को भाती हैं। जो लोग परमेश्वर की परीक्षा लेते हैं, उन्हें कभी भी वह उत्तर नहीं मिलता जिसकी वे माँग करते हैं (वचन 16) और यीशु दुष्टात्माओं को निकालता है क्योंकि वह परमेश्वर का पुत्र है।

इसे हम कैसे लागू कर सकते हैं?

1. हमें कभी भी निराश नहीं होना चाहिए और अच्छी चीज़ों के लिए प्रार्थना करना नहीं छोड़ना चाहिए। लगातार प्रार्थना करते रहें।
2. परमेश्वर की परीक्षा लेने के लिए उनसे चिह्नों की मांग करने से बचें, बल्कि उसके वायदों पर भरोसा रखें।
3. जब यीशु के नाम से लोगों के साथ अच्छी बातें घटित होंगी, तब भी विरोध होगा।

31 अगस्त 2025	44^{वाँ} रविवार	डोर्मिशन के पश्चात् तीसरा रविवार	
वचन का पाठ			
यहेजकेल 18:21–24	भजन 146	2 कुरिन्थियों 10:1–7	संत मत्ती 17:22–27

सुसमाचार विषय: अपने कर्तव्यों का निर्वहन

यह पाठ किस के विषय में है?

यीशु अपने दुखभोग और अपनी मृत्यु की भविष्यवाणी करते हैं। तथा वे एक चमत्कार भी करते हैं ताकि यीशु और संत पतरस दोनों अपना अनिवार्य मंदिर का कर भुगतान कर सकें।

हम इससे क्या सीखते हैं?

हम सीखते हैं कि, यीशु स्वेच्छा से क्रूस पर गए। किसी ने उन पर दबाव नहीं डाला, वे इसके लिए तैयार थे। यीशु नागरिक कर्तव्यों और कानूनों के प्रति वफादार रहकर अनावश्यक दोष से बचना चाहते थे और इसलिए उन्होंने अनिवार्य कर का भुगतान किया।

इसे हम कैसे लागू कर सकते हैं?

1. यीशु सब जानते है, हमारी ज़रूरतों और हमारे भविष्य के बारे में। हमारे लिए यह जानना बहुत ही सांत्वनादायक है।
2. यीशु ने हमसे अपने कर्तव्यों और जिम्मेदारियों को पूरा करने में सहायता करने का वादा किया है। हमें केवल उस पर भरोसा करने और हर विचार को मसीह के अधीन करने की ज़रूरत है।
3. हमें अनावश्यक रूप से लोगों को ठेस नहीं पहुंचाना चाहिए, भले ही हमें ऐसा करने का अधिकार हो।

7 सितम्बर 2025	45वाँ रविवार	डोर्मिशन के पश्चात् चौथा रविवार

वचन का पाठ

निर्गमन 3:1–6, 11–14	भजन 37:1–11	1 कुरिन्थियों 3:16–23	संत मत्ती 5:38–48

सुसमाचार विषय: ईमानदारी से चलें

यह पाठ किस के विषय में है?

जब उन सिद्धान्तों के बारे में सिखाते हुए जिनके अनुसार हमें जीना चाहिए, यीशु दूसरों से प्रेम करने के महत्व पर ज़ोर देते हैं, यहाँ तक कि उनसे जो हमारे प्रति निर्दयी और अप्रिय हैं।

हम इससे क्या सीखते हैं?

हम सीखते हैं कि हमें बुराई का जवाब बुराई से नहीं, बल्कि प्रेम और दया से देना चाहिए। ऐसा करने से, हम पिता का अनुकरण करते हैं और सिद्धता की ओर बढ़ते हैं।

इसे हम कैसे लागू कर सकते हैं?

1. आत्म–संयम के लिए प्रार्थना करें ताकि जब कोई आपको शब्दों या कार्यों से चोट पहुंचाए, तो कठोर शब्दों या हिंसा से प्रतिक्रिया न करें।
2. अपने विरोधियों के लिए ईमानदारी से प्रार्थना करें।
3. दयादान, प्रार्थना और उपवास जैसे आत्मिक अनुशासनों का अभ्यास [संत मत्ती 6:1–18] करके हम स्वर्ग के पिता के समान बन सकते हैं।

8 सितम्बर 2025, सोमवार

थियोटोकोस के नेटिवीटी (प्रभु की माता का जन्म) का पर्व

वचन का पाठ

उत्पति 28:10–17	यहेजकेल 43:27–44:4	फिलिप्पियों 2:5–11	संत लूका 1:39–49, 56; 11:27–28

सुसमाचार विषयः माता मरियम महान् उदाहरण

यह पर्व किस के विषय में है?

यह पर्व हमारे प्रभु यीशु मसीह की माता, संत मरियम के जन्म को मनाता है, जैसा कि पवित्र कलीसिया की परंपरा द्वारा हम तक पहुँचाया गया है।

हम इससे क्या सीखते हैं?

परमेश्वर ने कैसे एक भक्त बुजुर्ग दम्पति की प्रार्थनाओं का उत्तर दिया और कैसे उस दम्पति ने अपनी प्रतिज्ञात संतान, मरियम को प्रभु को भेंट के रूप में अर्पित किया ।

इसे हम कैसे लागू कर सकते हैं?

1. माता मरियम के माता–पिता की तरह, यह हमारा भी सबसे बड़ा सौभाग्य है कि हम अपने बच्चों को, चाहे वे लड़का हों या लड़की, उन्हें परमेश्वर और उसकी पवित्र कलीसिया की सेवा करने के लिए समर्पित करें।
2. माता मरियम के जीवन में परमेश्वर के उद्देश्यों का अनुकरण करने हेतु हमारे पास एक महान उदाहरण है, जो हमारी तरह एक मनुष्य थीं और उन्होंने पूरी तरह से परमेश्वर की आज्ञा का पालन करने का चुनाव किया।
3. हमें जीवित परमेश्वर का 'मंदिर' बनना है – ठीक माता मरियम की तरह और सभी को मसीह की ओर इंगित करना है।

14 सितम्बर 2025	46वाँ रविवार पवित्र क्रूस का पर्व		
वचन का पाठ			
गिनती 21:4–9	भजन 98:1–5	गलातियों 2:17–3:14	संत लूका 21:5–28

सुसमाचार विषयः क्रूस की विजय

यह पर्व किस के विषय में है?

यह पर्व 'सच्चे क्रूस' की खोज की ऐतिहासिक घटना का स्मरण कराता है – वह क्रूस जिसका उपयोग प्रभु यीशु मसीह को क्रूस पर चढ़ाने में किया गया था।

हम इससे क्या सीखते हैं?

हम पढ़ते हैं कि चौथी शताब्दी में, संत हेलेना को सच्चा क्रूस मिला, इस सच्चा क्रूस की चमत्कारिक पुष्टि हुई, और कैसे उसके बेटे सम्राट कोन्स्टेंटाइन ने बाद में वहां एक पुण्यस्थल बनवाया।

इसे हम कैसे लागू कर सकते हैं?

1. क्रूस हमारी विश्वास का प्राथमिक प्रतीक है, हम स्वयं पर क्रूस का चिह्न बनाते हैं, अपने वेदियों (घर और चर्च) पर क्रूस रखते हैं और यहां तक कि उसे पहनते भी हैं।
2. क्रूस सभी बुराइयों पर ईश्वर की विजय का प्रतीक है, इसलिए हम पर्व के दौरान दुनिया के चारों कोनों में क्रूस को उठाते हैं।
3. जब हम क्रूस को देखते हैं, तो हम हमारे खातिर मसीह की पीड़ा के लिए परमेश्वर को धन्यवाद देते हैं।
4. क्रूस हमें मसीह की बुलाहट को स्मरण दिलाता है कि हम अपना क्रूस उठा लें और उनके पीछे चलें।

21 सितम्बर 2025	47वाँ रविवार	पवित्र क्रूस के पर्व के पश्चात् पहला रविवार	
वचन का पाठ			
यशायाह 1:10-20	भजन 34	1 कुरिन्थियों 2:10-16	संत मरकुस 13:28-37

सुसमाचार विषयः चौकस और तैयार रहें

यह पाठ किस के विषय में है?

मसीह निश्चित रूप से वापस आएंगे। परन्तु उनके 'अचानक' आगमन का अर्थ है कि हमें 'जागृत' और तैयार रहना होगा।

हम इससे क्या सीखते हैं?

कभी-कभी, उनके आने में देरी के कारण, हम सांसारिक कार्यों में उलझ सकते हैं (संत मत्ती 13:38, 39) और बेतैयार पकड़े जाएँ (दस कुंवारियों का दृष्टांत)। हमें अपने जीवन में आलस्यपन और आत्मसंतुष्टि को अनुमति नहीं देनी चाहिए, बल्कि उनके आगमन तक उनके काम में विश्वासयोग्य और ईमानदार रहना चाहिए।

इसे हम कैसे लागू कर सकते हैं?

1. कभी भी उन लोगों से धोखा न खाएं जो कहते हैं - यीशु एक विशेष तारीख को वापस आ रहे हैं! कोई भी उनके लौटने का समय नहीं जानता और हमें इसे जानने के पीछे भागना भी नहीं चाहिए।
2. आश्वस्त रहें कि मसीह हमें घर ले जाने के लिए वापस आएंगे, जैसा उन्होंने वायदा किया था।
3. जब वे आते हैं, तो वे हमें विश्वासयोग्य पाएं। इसलिए, आइये, हम वही करते रहें जो मसीह ने हमें करने के लिए दिया है।

28 सितम्बर 2025	48^{वाँ} रविवार		पवित्र क्रूस के पर्व के पश्चात् दूसरा रविवार
वचन का पाठ			
1 राजा 3:5–9	भजन 19:7–14	1 कुरिन्थियों 2:14–3:9	संत मत्ती 16:5–12

सुसमाचार विषयः झूठी शिक्षाओं और शिक्षकों से सावधान रहें

यह पाठ किस के विषय में है?

यहाँ यीशु अपने शिष्यों को चेतावनी देते हैं कि वे कपटी फरीसियों और सदूकियों की शिक्षाओं से गलत रीति पर प्रभावित होने से सावधान रहें।

हम इससे क्या सीखते हैं?

यद्यपि चेले यीशु के साथ थे, विश्वास की कमी के कारण, उनके हृदय कठोर हो गए थे, इसलिए वे आत्मिक सच्चाइयों को नहीं समझ सके। हम यह भी सीखते हैं कि, जैसे थोड़ा–सा खमीर बहुत सारे आटे में फैलकर उसे पूरी तरह खमीर कर सकता है, वैसे ही झूठी शिक्षाएँ तेजी से फैल सकती हैं और लोगों के जीवन को नष्ट कर सकती हैं।

इसे हम कैसे लागू कर सकते हैं?

1. परमेश्वर से प्रार्थना करें कि वह हमें परख और प्रबुद्ध हृदय प्रदान करे ताकि हम उसका सत्य समझ सकें।
2. प्रारम्भिक कलीसिया के पितामहों के द्वारा हमें दी गई सही शिक्षाओं को थामे रहें – ताकि हम भटक न जाएं।
3. झूठे शिक्षकों और उनके सिद्धांतों को ध्यान न दें, वे तुम्हें नष्ट कर देंगे (2 तीमुथियुस 2:17)।

5 अक्टूबर 2025	**49वाँ रविवार**	**पवित्र क्रूस के पर्व के पश्चात् तीसरा रविवार** **सिस्टर्स ऑफ क्रॉस रविवार** ***—विशेष दान***

वचन का पाठ

नीतिवचन 1:2–9	भजन 8	रोमियों 8:1–11	संत मरकुस 2:23–28

सुसमाचार विषयः दयालुता को विधिवाद पर विजय प्राप्त करनी चाहिए

यह पाठ किस के विषय में है? (संत मत्ती 12:1–14 और संत लूका 6:1–11 भी पढ़ें)

फरीसी, जो अपने धार्मिक नियमों में कठोर हैं, यीशु में दोष पाते हैं, क्योंकि उनके शिष्यों ने सब्त के दिन 'व्यवस्था' तोड़ी थी। स्वयं व्यवस्था देनेवाले यीशु ने उन्हें याद दिलाया कि परमेश्वर बलिदान (धार्मिक रीति–रिवाज़) नहीं बल्कि दया चाहता है (संत मत्ती 12:7)।

हम इससे क्या सीखते हैं?

परमेश्वर की व्यवस्थाओं का उपयोग लोगों की निंदा करने के लिए नहीं किया जाना चाहिए, न ही वे हमें दूसरों की ज़रूरतों के प्रति असंवेदनशील बनाये। हमें धार्मिक दायित्वों को पूरा करने से ज्यादा प्राथमिकता 'दया' रखने में देना चाहिए – दूसरों के प्रति अच्छा करना और उनकी ज़रूरतों के प्रति संवेदनशील होना।

इसे हम कैसे लागू कर सकते हैं?

1. लोगों पर दया करें, उनकी आवश्यकताओं के प्रति संवेदनशील रहें और उन पर दोषारोपण न करें।
2. धार्मिक नियमों को हमें दूसरों के प्रति अंधा या असंवेदनशील बनाने की इजाजत न दें।
3. यीशु के उदाहरण का अनुसरण करें, न कि आत्म–धर्मी फरीसियों का।

12 अक्तूबर 2025	50वाँ रविवार	पवित्र क्रूस के पर्व के पश्चात् चौथा रविवार	
वचन का पाठ			
1 राजा 8:22–30	भजन 42	1 कुरिन्थियों 1:21–29	संत लूका 16:9–18

सुसमाचार विषय: धन के प्रति विश्वासयोग्य रहें

यह पाठ किस के विषय में है?

यह पाठ विश्वासयोग्य होने के बारे में बात करता है, विशेष रूप से हमारे धन के प्रति (भौतिक संपत्ति, धन आदि), हमारा दृष्टिकोण धन के प्रति कैसा होना चाहिए और यह हमारे जीवन में सच्ची आत्मिक आशिषों से कैसे संबंधित है।

हम इससे क्या सीखते हैं?

हम सीखते हैं कि यद्यपि धन अपने आप में बुरा नहीं है, फिर भी धन (अपना हो या दूसरों का) के लेनदेन में हमारी ईमानदारी का सीधा संबंध परमेश्वर द्वारा हमें दी जानेवाली आध्यात्मिक आशिषों से है।

इसे हम कैसे लागू कर सकते हैं?

1. परमेश्वर द्वारा हमें प्रदान किये गए धन और संसाधन के प्रति अपना दशमांश, भेंट, दयादान और परमेश्वर की सेवा के लिए देने के द्वारा वफादार रहें।
2. केवल पैसे के आधार पर निर्णय लेकर कभी भी पैसे के गुलाम न बनें।
3. धन का उपयोग अनंतकाल में मित्र बनाने के लिए करें।

19 अक्टूबर 2025	51वाँ रविवार	पवित्र क्रूस के पर्व के पश्चात् पाँचवाँ रविवार

वचन का पाठ

लैव्यव्यवस्था 2:1–3	भजन 46	1 तीमुथियुस 6:13–21	संत मत्ती 23:1–12

सुसमाचार विषयः दीन लोग ऊँचे उठाये जायेंगे

यह पाठ किस के विषय में है?

यीशु इस विषय में बात करते हैं कि कैसे कुछ लोग अपने आध्यात्मिक अधिकार का दुरुपयोग करते हैं और हम उनके शिष्यों को उनसे किस तरह से अलग होना चाहिए।

हम इससे क्या सीखते हैं?

हम सीखते हैं कि हम परमेश्वर की नज़रों से नहीं बच सकते और हमारे सभी इरादे परमेश्वर को साफ दिखाई देते हैं। इसलिए, जब हम खुद को बड़ा बनाते हैं, तो यह उसे प्रसन्न नहीं करता। नम्रता और सेवक–हृदय होना, परमेश्वर को भाता है।

इसे हम कैसे लागू कर सकते हैं?

1. हमें कभी भी दूसरों को दिखाने के लिए काम नहीं करना चाहिए।
2. हमें परमेश्वर द्वारा दी गई अधिकारियों के अधीन और आज्ञाकारी होना है।
3. दीन और सेवक–हृदय बनने का प्रयास करें।

   * पाखंडी अगुवों को पिता और शिक्षक न कहने की यीशु की इस चेतावनी को गलत न समझें, क्योंकि यह इन शब्दों के उपयोग के विरुद्ध प्रतिबन्ध लगाना नहीं है। कलीसिया के आरंभिक दिनों से ही, परमेश्वर द्वारा दिए गए अधिकार में होनेवाले – बिशप और याजकों को 'पिता' कहा जाता था।

26 अक्टूबर 2025	52[वाँ] रविवार	पवित्र क्रूस के पर्व के पश्चात् छठा रविवार	
वचन का पाठ			
यशायाह 43:16–25	भजन 84	1 कुरिन्थियों 5:6–13	संत लूका 18:18–27

सुसमाचार विषयः परमेश्वर को सर्वोपरि प्राथमिकता देना

यह पाठ किस के विषय में है?

वार्तालाप के दौरान एक धनवान, जवान, धर्मी शासक जो ईमानदारी से परमेश्वर का अनुसरण करना चाहता है, यीशु उसे यह समझने में मदद करते हैं कि परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने के उसके मार्ग में क्या बाधा है।

हम इससे क्या सीखते हैं?

परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना दुनिया की सारी दौलत से ज्यादा महत्वपूर्ण है। परन्तु हम दौलत से इतना ज्यादा जुड़े हुए हो सकते हैं कि यह हमें परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने से रोक सकता है।

इसे हम कैसे लागू कर सकते हैं?

1. आज्ञाओं का पालन पर्याप्त नहीं है; परन्तु मसीह के लिए सब कुछ त्यागने के लिए तैयार रहना चाहिए।
2. सब कुछ – धन, संपत्ति, परिवार, सम्मान, समाज, शिक्षा और ऐसी सभी चीज़ें परमेश्वर के बाद दूसरे स्थान पर आनी चाहिए।
3. यदि कोई ऐसी चीज़ है जो हमें मसीह का पूरी तरह से अनुसरण करने से रोक रही है, तो प्रार्थना करें कि परमेश्वर हमें उस आशक्ति पर काबू पाने में मदद करे। परमेश्वर के लिए कुछ भी असम्भव नहीं है।

बिलीवर्स ईस्टर्न चर्च का चर्च कैलेण्डर–2024–2025

दिन/तारीख़	पर्व	विवरण
3 नवम्बर 2024, रविवार	कलीसिया का पवित्रीकरण *(कुधोश इथो)*	कलीसिया का पवित्रीकरण रविवार, यह चर्च कैलेण्डर की शुरुआत है।
10 नवम्बर 2024, रविवार	कलीसिया का समर्पण *(हुदोश इथो)*	कलीसिया का समर्पण रविवार/ नवीनीकरण।
17 नवम्बर 2024, रविवार	जकरयाह को उद्घोषणा *(सुबोरेब दजखरयो)*	यह दिन प्रधानदूत जिब्राईल के द्वारा जकरयाह को यूहन्ना बपतिस्मा दाता के जन्म का संदेश देने का दिन के रूप में मनाया जाता है।
21 नवम्बर 2024, बृहस्पतिवार	**थियोटोकोस (प्रभु की माता) के प्रवेश का पर्व**	जब एक छोटी बच्ची के रूप में कुँवारी मरियम यरूशलेम मंदिर में प्रवेश करती है उस सम्बन्ध में यह पर्व मनाया जाता है।
24 नवम्बर 2024, रविवार	थियोटोकोस को उद्घोषणा *(सुबोरेब दजखरयो)*	प्रधानदूत जिब्राईल ने कुँवारी मरियम को यह घोषणा किया कि वह यीशु मसीह की माता बनेगी।
1 दिसम्बर 2024, रविवार	नेटिवीटी का उपवास *(25 दिनों का उपवास)*	यीशु मसीह के जन्म की तैयारी में उपवास की अवधि।
1 दिसम्बर 2024, रविवार	संत मरियम का इलीशिबा से भेंट करना *(मेजाल्तो)*	संत मरियम का यूहन्ना बपतिस्मा दाता की माता इलीशिबा से भेंट करने का दिन के रूप में स्मरण किया जाता है।
8 दिसम्बर 2024, रविवार	यूहन्ना बपतिस्मा दाता का जन्म *(मौलोदेब–द युबानोन ममदोनो)*	यूहन्ना बपतिस्मा दाता के जन्म का दिन मनाया जाता है।

दिन/तारीख	पर्व	विवरण
15 दिसम्बर 2024, रविवार	संत यूसुफ को उद्घोषणा	प्रधानदूत जिब्राईल द्वारा संत यूसुफ को, प्रभु यीशु मसीह के जन्म होने का संदेश मिलने के दिन के रूप में मनाया जाता है।
18 दिसम्बर 2024, बुधवार	संत थॉमस दिवस *(दुखरानो)*	संत थॉमस के शहादत को याद करने का दिन।
25 दिसम्बर 2024, बुधवार	**यीशु मसीह का जन्म–पर्व—क्रिसमस *(येल्दो)***	हमारे प्रभु का जन्म/प्रभु का देहधारण।
1 जनवरी 2025, बुधवार	हमारे प्रभु का खतना का पर्व	यहूदी परम्परा के अनुसार हमारे प्रभु का खतना और यीशु का नाम प्राप्त होने के सम्बन्ध में पर्व मनाना।
6 जनवरी 2025, सोमवार	हमारे प्रभु की थिओफॅनी का पर्व *(देनहो)*	यर्दन नदी में संत यूहन्ना बपतिस्मा दाता द्वारा यीशु का बपतिस्मा लेने का पर्व मनाया जाना।
7 जनवरी 2025, मंगलवार	संत यूहन्ना बपतिस्मा दाता का दिवस	संत यूहन्ना बपतिस्मा दाता का सिर काटे जाने का पर्व मनाया जाना।
8 जनवरी 2025, बुधवार	संत स्तेफनुस दिवस	यह पर्व संत स्तेफनुस जो डीकनों का प्रमुख और प्रथम शहीदों में से एक की याद दिलाता है।
18 जनवरी 2025, शनिवार	अलेक्ज़ेन्ड्रिया का पेट्रीर्याक संत अथानासियुस महान् का पर्व	यह संत अथानासियुस द ग्रेट, जो चौथी शताब्दी में अलेक्ज़ेंड्रिया के कुलपिता जिन्हें कलीसिया का डॉक्टर माना जाता है और उन्हें 'आर्थोडॉक्स का पिता' कहा जाता है।

दिन/तारीख	पर्व	विवरण
2 फरवरी 2025, रविवार	यीशु के अर्पण का पर्व *(मयल्तो)*	शिशु यीशु को पवित्र मंदिर में अर्पित करने का दिन मनाया जाना।
10 फरवरी 2025, सोमवार	नीनवे का लेन्ट/ तीन दिन का उपवास आरम्भ होता है	इस उपवास का पालन प्राचीन समय के नीनवे के लोगों का उदाहरण को अपनाने के लिए किया जाता है जिन्होंने योना नबी के द्वारा परमेश्वर की चेतावनी को सुना और परमेश्वर की दया पाने के लिए सभी लोगों को उपवास करने की घोषणा की।
16 फरवरी 2025, रविवार	सभी स्वर्गवासी पुरोहित *(कोहने रविवार)*	पवित्र कलीसिया में सभी स्वर्गवासी पुरोहितों के सच्चे विश्वास और उनकी सेवकाई को याद करने का दिन।
23 फरवरी 2025, रविवार	सभी स्वर्गवासी विश्वासी *(अनीदि रविवार)*	पवित्र कलीसिया में सभी स्वग. र्वासी विश्वासियों को याद करने का दिन।
2 मार्च 2025, रविवार	महान् लेन्ट का पहला रविवार/महान् लेन्ट का पेथुरता, *(कोथेनो रविवार)*	यीशु के द्वारा काना में पहला आश्चर्यकर्म करने का दिवस मनाने के द्वारा महान् लेन्ट का आरम्भ होता है। (पेथुरत–लौटना या रुकना)
3 मार्च 2025, सोमवार	महान् लेन्ट का पहला सोमवार	मेल मिलाप की सेवा महान् लेन्ट के पहले सोमवार को की जाती है। यह विश्वासियों को महान् लेन्ट के समय में प्रवेश करने के लिए तैयार करने में सहायता प्रदान करती है।

दिन/तारीख	पर्व	विवरण
9 मार्च 2025, रविवार	महान् लेन्ट का दूसरा रविवार	कुष्ठ रोगियों को चंगाई मिलने का आश्चर्यकर्म को याद करने का दिन।
16 मार्च 2025, रविवार	महान् लेन्ट का तीसरा रविवार, *(म्हार्यो रविवार)*	लकवाग्रस्त की चंगाई याद करने का दिन।
23 मार्च, रविवार	महान् लेन्ट का चौथा रविवार, *(क्नानैतो रविवार)*	कनानी स्त्री की बेटी को चंगाई मिलने का दिन मनाना।
25 मार्च 2025, मंगलवार	**थियोटोकोस (प्रभु की माता) को उद्‌घोषणा का पर्व (सुबोरो)**	प्रधानदूत जिब्राईल द्वारा कुँवारी मरियम को हमारे प्रभु यीशु मसीह के देहधारण के बारे संदेश मिलने का दिन का पर्व मनाना।
6 अप्रेल 2025, रविवार	महान् लेन्ट का छठा रविवार *(समयो रविवार)*	अँधे व्यक्ति को चंगाई मिलने के दिन को मनाना।
13 अप्रेल, रविवार	**खजूर रविवार का पर्व**	हमारे प्रभु का यरूशलेम में प्रवेश का पर्व मनाना।
16 अप्रेल 2025, बुधवार	पवित्र बुधवार	यह प्रमुख और पवित्र सप्ताह का बुधवार है, जिसमें कलीसिया दो घटनाओं को याद करता है–एक पापी स्त्री के द्वारा लोहबान के साथ अभिषेक और यहूदा द्व ारा यहूदी अधिकारियों के साथ मिलकर अपने स्वामी को धोखा देने दे के लिए किए गए समझौता। इस दिन शाम की सेवाओं में पवित्र अनुष्ठान का संस्कार आमतौर पर विश्वासियों को दिया जाता है।

दिन/तारीख	पर्व	विवरण
17 अप्रेल 2025, बृहस्पतिवार	पवित्र बृहस्पतिवार	यह पवित्र सप्ताह का बृहस्पतिवार है, जहाँ कलीसिया मसीह के रहस्यमय प्रभु–भोज का स्मरण करता है, जिसमें उन्होंने पवित्र प्रभु–भोज के संस्कार की स्थापना की थी। उनकी याद में हमेशा के लिए मनाया जा सकता है।
18 अप्रेल 2025, शुक्रवार	पवित्र शुक्रवार *(हाशो)*	यीशु मसीह के क्रूस पर चढ़ाये जाने को मनाने के लिए दिन।
19 अप्रेल 2025, शनिवार	पवित्र शनिवार	यह पवित्र सप्ताह का अंतिम दिन है और लेंट काल का अंत है। कलीसिया इसे उस दिन के रूप में याद करता है, जब मसीह का नश्वर शरीर कब्र में पड़ा था, उसकी आत्मा पाताल लोक में उतरकर उसको कब्जा किया और उसके निवासियों को सुसमाचार सुनाया।
20 अप्रेल 2025, रविवार	**पर्वों का पर्वः ईस्टर ईस्टर रविवार (*कीमोथो*)**	ईस्टरः हमारे प्रभु और उद्धारकर्ता यीशु मसीह का जीवन दायी पुनरुत्थान का पर्व मनाना।
27 अप्रैल 2025, रविवार	नया रविवार	ईस्टर के बाद पहला रविवार, कलीसिया उस समय की याद दिलाती है जब मसीह ने अपने आपको संत थॉमस और अन्य शिष्यों को प्रकट किया, जहाँ प्रभु ने उन्हें अपने घाव के निशान दिखाए, जिससे संत थॉमस के संदेह दूर हुए।

दिन/तारीख़	पर्व	विवरण
8 मई 2025, बृहस्पतिवार	अथनेसियस योहान प्रथम मेट्रोपोलिटन स्मृति दिवस	स्मृति दिवस : विश्राम कर रहे अथनेसियस योहान प्रथम मेट्रोपोलिटन, धन्य स्मृति।
29 मई 2025, बृहस्पतिवार	**हमारे प्रभु के स्वर्गारोहण का पर्व (*सुलोको*)**	यीशु के पुनरूत्थान के 40 दिनों के बाद उसके स्वर्ग में उठा लिए जाने का पर्व मनाना।
8 जून 2025, रविवार	पिन्तेकुस्त का पर्व	यह पर्व पिन्तेकुस्त के दिन पवित्र आत्मा चेलों पर उतरा, जिसके परिणामस्वरूप कलीसिया की स्थापना के सम्बन्ध में मनाया जाता है।
16 जून, सोमवार	प्रेरितों का लेन्ट	यह उपवास 16 जून से शुरू होता है और 29 जून को समाप्त होता है, इस उपवास को करने का अर्थ है प्रेरितों के पदचिन्हों पर चलना, (इब्रानियों 13:7) जो संत मत्ती 9:15 में प्रभु यीशु के वचन को पूरा होने के लिए उपवास किए।
29 जून 2025, शनिवार	संत पतरस और संत पौलुस का पर्व	इन दो महान् संतों की स्मृति के उत्सव के साथ प्रेरितों का उपवास समाप्त होता है।
3 जुलाई 2025, बृहस्पतिवार	संत थोमा दिवस (*दुखरानो*)	संत थोमा के सेवा और जीवन को याद करना।

दिन/तारीख़	पर्व	विवरण
5 जुलाई 2025, शनिवार	72 प्रचारकों का पर्व	72 शिष्यों को याद करना।
1 अगस्त 2025, शुक्रवार	15 दिन का डोर्मिशन लेन्ट	1–15 अगस्त तक यह समय विश्वासियों को स्वयं को अपनी मृत्यु के लिए तैयार करने का समय है। क्योंकि यीशु की माता की मृत्यु सभी लोगों के लिए अनुकरणीय और वांछनीय है।
6 अगस्त 2025, बुधवार	**हमारे प्रभु के रुपान्तरण का पर्व**	यह ताबोर पर्वत पर यीशु के रूपान्तरण का पर्व मनाना है।
15 अगस्त 2025, शुक्रवार	**थियोटोकोस के डोर्मिशन का पर्व (*शूनोयो*) (प्रभु की माता का स्वर्गवास का पर्व)**	यह पर्व हमारे प्रभु यीशु मसीह की माता की मृत्यु या सो जाने का पर्व मनाती है।
8 सितम्बर 2025, सोमवार	**थियोटोकोस के नेटिवीटी का पर्व (प्रभु की माता का जन्म का पर्व)**	हमारे प्रभु यीशु मसीह की माता के जन्म का पर्व मनाया जाता है।
14 सितम्बर 2025, रविवार	**पवित्र क्रूस का पर्व**	सम्राट कोन्सटेनटाइन की माता संत हेलेन के द्वारा हमारे प्रभु और उद्धारकर्ता यीशु मसीह के पवित्र क्रूस की खोज का पर्व मनाया जाना।
23 अक्टूबर 2025, बृहस्पतिवार	प्रेरित, संत याकूब का पर्व	हमारे प्रभु यीशु का भाई और यरूशलेम का प्रथम बिशप संत याकूब के जीवन को याद करना।

विशेष दिन

विशेष दिन	सप्ताह	तिथि
माता–पिता रविवार	3रा रविवार	17 नवम्बर 2024
महिला रविवार	5वाँ रविवार	1 दिसम्बर 2024
बाल रविवार	6वाँ रविवार	8 दिसम्बर 2024
याजक रविवार	13वाँ रविवार	26 जनवरी 2025
युवा रविवार	26वाँ रविवार	27 अप्रैल 2025
मिशन रविवार	32वाँ रविवार	8 जून 2025
सेमिनरी रविवार	35वाँ रविवार	29 जून 2025
सिस्टर्स ऑफ क्रॉस रविवार	49वाँ रविवार	5 अक्टूबर 2025